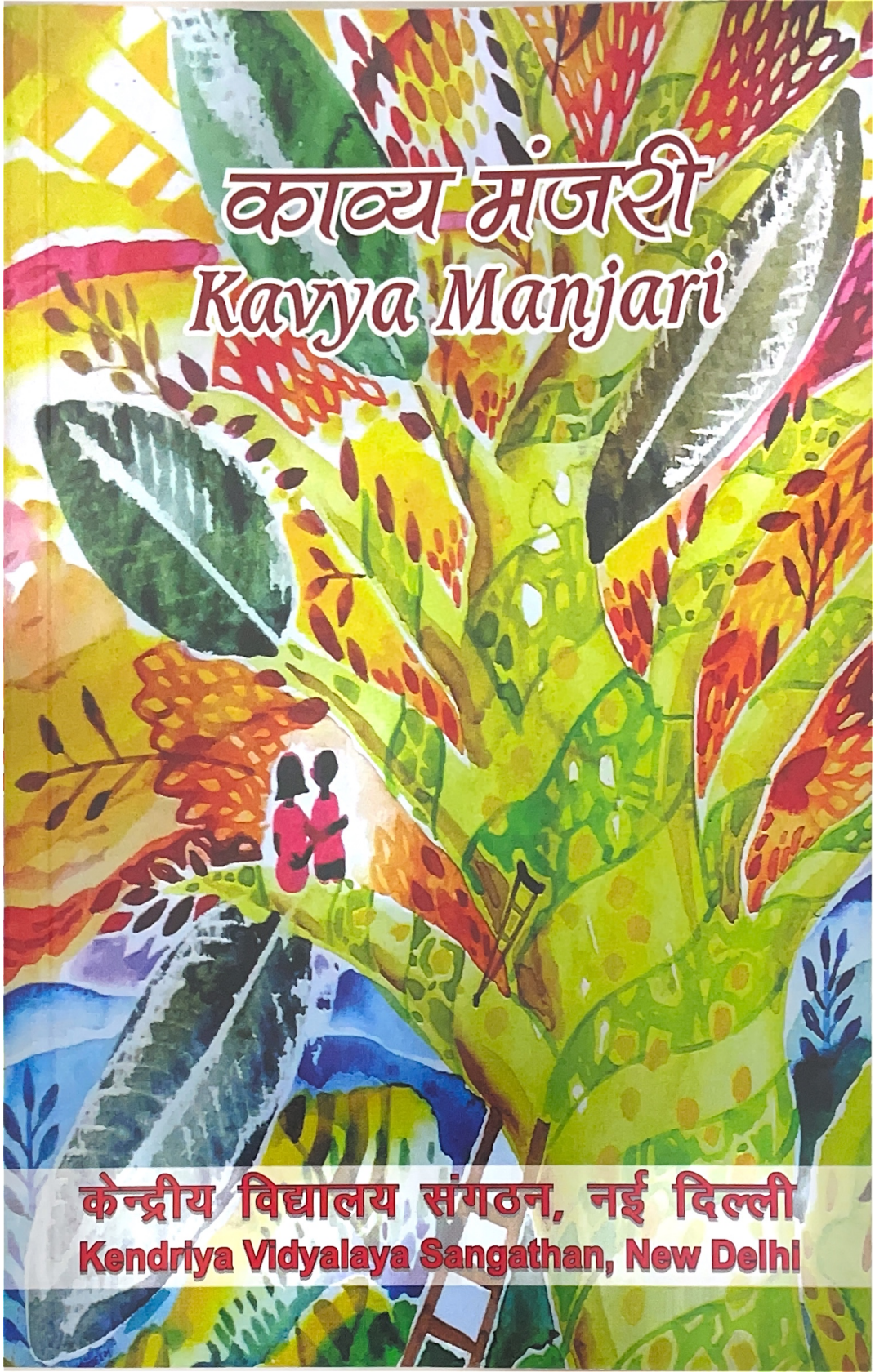
काव्य मंजरी
Kavya Manjari
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली
Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

काव्य मंजरी

भाग-12

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

© केंद्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी, भाग–12

शिक्षक दिवस–2018 के उपलक्ष्य में प्रकाशित केंद्रीय विद्यालय शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा रचित कविताओं का संकलन

कुल प्रतियां: 1600/–

मार्गदर्शन	:	**संतोष कुमार मल्ल** आयुक्त, के.वि.सं
संपादक	:	**डॉ. शची कांत** संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)
संपादकीय प्रभारी	:	**सचिन राठौर** सहायक संपादक, के.वि.सं. (मु)
प्रूफ रीडर	:	**नेगपाल सिंह** के.वि.सं. (मु)
आवरण पृष्ठ	:	**होसला राव** प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (कला), के.वि. सीहोर

अपर आयुक्त (शैक्षिक), **उदय नारायण खवाड़े,** केंद्रीय विद्यालय संगठन, मुख्यालय, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित

मुद्रक : **डॉल्फिन प्रिंटो–ग्राफिक्स,** 1ई/18, चौथी मंजिल, झण्डेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110055

दो शब्द

काव्य मंजरी का 12वां अंक सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे सुखद अनुभूति हो रही है। यह प्रकाशन विभिन्न स्तरों पर कार्यरत हमारे शिक्षकों एवं अन्य सहकर्मियों के रचनात्मक कौशल की सुंदर अभिव्यक्ति है।

इस अंक में समाहित रचनाओं में शब्दों की कला, कल्पना की उड़ान एवं संवेदनाओं के चित्रण से एक ओर काव्य के नैसर्गिक सौंदर्य को तराशा गया है, वहीं दूसरी ओर रचनाओं में जीवन–मूल्यों से साक्षात्कार की सहज अनुभूति मिलती है।

रचनाकारों द्वारा अत्यंत सरलता से जीवन के विविध आयामों को जिस कला से शब्दों में पिरोया गया है, वह वास्तव में अद्‌भुत है। अपने साथियों की रचनात्मक प्रतिभा से प्रेरित होकर मैं भी दो पंक्तियों में अपनी शुभकामनाएं अर्पित करता हूं:

कवि ही नहीं तुम काव्य बनो,
साधन नहीं तुम साध्य बनो।

जीवन हो धवल, उज्ज्वल, निर्मल,
तुम जन–जन के आराध्य बनो।।

आशा करता हूं कि आपके सकारात्मक सुझावों से आने वाले अंक में और अधिक गुणात्मक सुधार आएगा।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

संतोष कुमार मल्ल
आयुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

कविताओं की सूची

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
1	विद्यालय गीत	उदय नारायण खवाड़े	1
2	'हकीकत'	ऊषा रानी	2
3	एकाकी	उर्मिला रावत	4
4	हन्त रे मनुष्यता !	जयन्ती नयन	5
5	मन कहता	नितिन कुमार मिश्र	7
6	कहीं शब्द इसे मैला न कर दें	मीता गुप्ता	9
7	भगवान मुझको पेड़ बना दों	मेधा उपाध्याय	10
8	औरत की सहूलियत	मनोज कुमार वर्मा	12
9	वासंती ताँका	कमला निखुर्पा	13
10	नन्ही उंगलिया	राजीव रंजन	14
11	गुरु शिष्य परंपरा	डॉ. चारू शर्मा	15
12	प्रकृति की कृति	अवंतिका द्विवेदी	16
13	ये क्यूँ है	कृष्ण गोपाल	17
14	एक हादसा	जॉनी अहमद	18
15	माँ–बाप का जीवन	प्रदीप कुमार	19
16	रूपांतरण	नीलेश अग्रवाल	20
17	आस्था	सुशील कुमार 'आजाद'	21
18	ऐ ज़िंदगी	दिनेश पटेल	23
19	निज भाग्य–विधाता	डी. के. त्रिपाठी,	24
20	संस्कार	शोभा दीक्षित	25
21	सार्थक सफर के मुहाने	कुमार विनायक	26
22	चाक, बोर्ड और प्रयोगशाला	श्रीमती भारती पिल्लै	28
23	गुजारिश	अमिता राज	30

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
24	पिताजी	मनीष कुमार विजयवर्गीय	31
25	छोटी लड़कियों के सपने	डॉ. ऋतु त्यागी	32
26	आमंत्रण	परमानन्द	33
27	आत्मावलोकन	प्रमोद कुमार शर्मा	36
28	दीप ऐसा जलाओ	डॉ. हृदय नारायण उपाध्याय	37
29	युवती मीरा	अपराजिता	38
30	परिवार	डॉ॰ वेदप्रकाश गर्ग	40
31	गीत अभी तक ज़िंदा है	बिपिन पाण्डेय	41
32	बलिवेदी पर नारी	डॉ पूनम वाशिष्ठ	42
33	वो एक मज़दूर की बेटी है ।	चमन लाल	43
34	ऐसा कर्तव्य निभाया था	विनोदानन्द कुमार	45
35	मंज़िल आने वाली है !	अयोध्याप्रसाद द्विवेदी	47
36	करुण–याचना	आशुतोष द्विवेदी	48
37	नया सवेरा नई पवन है!	विजयराम पाण्डेय	50
38	संकल्प	सुमन शर्मा	51
39	चलो, एक और नया सूरज	एम. पी. त्रिपाठी	52
40	नारी शक्ति	एस॰ एस॰ एच॰ जैदी	53
41	उजाले की ओर	विनय कुमार तिवारी	54
42	बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ	अंजना शर्मा	55
43	ज़िंदगी फिर मिलेगी दोबारा	रामस्वरूप पंडित	56
44	बदलता समय	डी. पद्मा नायडू	58
45	ऐ मेरे देश के शिक्षक	दुर्गाबल्लभ शर्मा	59
46	शक्ति का प्रतीक है नारी	डॉ. पंकज कपूर	61
47	दिशाहीन	डॉ नीलू शर्मा	63
48	परिवर्तन	विनीता नरूला	65
49	कहाँ चले जाते है वो लोग	आकांक्षा जायसवाल	67
50	मूल की ओर	चन्द्रावती महरा	68

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
51	तुम नादान हो अभी	डॉ. ऋतु त्यागी	70
52	बीज पेड़ बन जाएगा	साधना कुमारी सचान	71
53	समर्पित	कृष्ण मोहन चौधरी	72
54	एक व्यक्तित्व	दीपशिखा गढ़वाल	73
55	आशा	मनोज कुमार पाण्डेय	75
56	वृक्ष की व्यथा	डॉ भोला दत्त जोशी	77
57	स्वतंत्रोत्सव	राधिका नागराजन	79
58	तिरंगा ही मुझको कफ़न ...	ए. अ. सिद्दीकी	81
59	शिक्षा की महिमा	डॉ. आनन्द कुमार त्रिपाठी	82
60	हिंदी के दीप जलाएंगे	दिनेश कुमार	83
61	मित्रवर मजदूर!	कुमार महापात्र	84
62	कल और आज	जालिम प्रसाद	86
63	खामोश सफ़र	संगीता रघुवंशी	88
64	जीवन चक्र	मोनिका एच॰ एस॰ नोटे	89
65	शिक्षक	डॉ. राकेश रंजन	90
66	मेरा जुनून	प्रतिभा पाध्ये	93
67	प्री–बोर्ड के बाद	उदयराज सरोज	94
68	हार ना मानो यूँ ही	अजय कुमार श्रीमाल	96
69	विदाई गीत	डॉ० आर.सी.पोद्दार	98
70	मैंने जीना सीख लिया है	रंजना त्रिपाठी	100
71	धिक्कार तुझे आतंकी	डॉ. संतोष कुमार गुर्जर	102
72	शिक्षक से–तुम हो तो ही ...	मल्लिका शेषाद्रि	104
73	छात्र–अभिलाषा	अमित दवे	105
74	पेड़ के गिरने पर	डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा	106
75	झुको मूल की ओर	संतलाल करुण	108
76	दो बात उस खास से	घनश्याम बादल	109
77	पहाड़	मुकुल नौटियाल	110

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
78	कलाम को सलाम	उमाशंकर पंवार	111
79	विद्यार्थी जीवन	सुरेश्वर मध्देशिया	112
80	के.वि. तेहरान शिक्षा का दर्पण	बृजेश कुमार	113
81	प्रेरणा के शब्द	लिली सिंह	115
82	एक कदम बढ़ा मानव अस्तित्व	डॉ. दिवाकर सिंह	116
83	ज़िन्दगी	भारतेन्दु पाण्डेय	117
84	प्रकृति क्या कहती है?	जी. वसुन्धरी	118
85	एक गुरु के अहसास	जागृति गुप्ता	120
86	चुनौती	अमित कुमार	121
87	मत टकराना अंगारों से	हंसनाथ यादव	122
88	जीवन बनता जाता भार	उषा कांत उपाध्याय	124
89	विदाई के पल	बृजेश कुमार पाल	126
90	श्रद्धांजलि : अब्दुल कलाम	रविता पाठक	127
91	संभावना	अदिता सक्सेना	129
92	नमन	विपिन कुमार मौर्य	131
93	मेरी पहचान	माहेजबीन मलेक	132
94	देखती हूँ	अंजनी आशा सलकर	133
95	नादान उड़ान	कृष्ण कौशिक	135
96	वृक्ष की पुकार	डॉ दीपिका सिंह	136
97	कल तुम चले जाओगे	आशुतोष मिश्रा	137
98	भर दो नवजीवन की आस	मीना अग्रवाल	138
99	विनम्रता	के.एस. अंगारे	139
100	सूरत और सरित	रमेश कुमार	140
101	श्रमेव जयते	कपिल कुमार	142
102	मुल्क मेरा मुकम्मल हो जाएगा	संजय कुमार जैन	143
103	'मैं' को 'हम' में बदल कर	नलिनी ओझा	144
104	हे मानव! पेड़ की व्यथा	मनोहर साहू	145

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
105	इंसान	नामदेव	146
106	संध्या	रामसुदर्शन राय	147
107	शिक्षक से	राकेश महातव	148
108	सोचो क्या कुछ कर पाते हो	डॉ विनय कुमार सिंह	149
109	क्या कहकर पुकारूँ उन्हें	रिंकी कुमारी	150
110	अब कोई नया मनुष्य जन्म ले	डी.पी. थपलियाल	151
111	भाग्य	रतन कुमार	153
112	जुगनू की सीख	वंदना कुमारी	154
113	फुर्सत से मैंने कभी	डॉ शची कांत	155
114	The Class Teacher	Bidyut Bikash Mahato	156
115	Little Caspers	C. Madhuri	158
116	The Painter Divine	Bina Mathew	159
117	My Students, My ...	Chhaya Kumar	160
118	I am a Woman	K.S. Soujanya Singh	161
119	Love	Jayasree Bhattacharyya	162
120	A Child within a Child	Jitendra Singh	163
121	Prayer to a Teacher	Preeti Roy	164
122	Interview at the School	J S V LAKSHMI	166
123	Constructive Destruction	G. MEENAKSHI	168
124	What their Lives will be	Payal Singh	170
125	The Painter Perfect	Yogesh Jethava	172
126	Life	SUVARNA SANER	173
127	The Race	N. Shesha Prasad	174
128	Funny Creatures	RAMESH B CHAVAN	176
129	Life is A Canvas	Shamsun Nis	177
130	Water Droplets	RAJESH VASHISTH	178

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
131	Let Us Be Learners for ...	Jaibala Prakash	180
132	A Glance	Anita Paul	182
133	Rock Upon The Rock	Subhash M E Toppo	183
134	Upheaval	Harshi Lamba	184
135	A Prayer to the Almighty	Biranchi Narayan Das	185
136	Education	Bhojraj R. Lanjewar	186
137	Unto the Last Breath	B. Lekha	187
138	To the Spirit of Woman	Dhwanika Pandya	188
139	Uninvited Guest ...	Usha Malayappan	189
140	Corruption	A. Sujhatha Devi	191
141	Thinking	Piyanki Namasudra	193
142	Eulogy 0512	Mrs. Rashmi Jain Bayati	194
143	Sunday Morning	M. ANITA TAMPI	195

1
विद्यालय गीत

मेरा केंद्रीय विद्यालय, तुम्हारा केंद्रीय विद्यालय।
मानवता निर्माण करे, हमारा केंद्रीय विद्यालय।।

मात–पिता ने हमको जनम दिया, मेरे हित हरदम किया दिया।
हम मेहनत कर सुबह शाम, रोशन करेंगे उनका नाम।।
पौरुष चरित का मान भरें, हमारा केंद्रीय विद्यालय।।

मन वचन कर्म से एक सभी, अन्वेषक अनुरागी नेक सभी।
माँ की करुणा से ओत–प्रोत, शिक्षक सारे हैं ज्योत–स्रोत।
बल कौशल ज्ञान प्रदान करे, हमारा केंद्रीय विद्यालय।।

स्कूली शिक्षा के हैं हम आदर्श, हम में समाहित सारा भारत वर्ष।
हम राही हैं विश्व विजय के, अनुशासन अभय विनय जय के।
संगठन शक्तिमान करे, हमारा केंद्रीय विद्यालय।।

हम सब के पोषक हैं पूषण, हम गुरु शिष्य करें साथ नमन।
दोनों में बल हो निश्छल हो, मन का हर कोना उज्जवल हो।
परमात्मा प्रीति प्राण भरे, हमारा केंद्रीय विद्यालय।।

उदय नारायण खवाड़े
अपरआयुक्त (शैक्षिक),
केविसं (मुख्यालय)

2
'हकीकत'

चढ़ते सूरज को सलाम करते है। सभी,

पर छुपते को करता है कोई–कोई।

पत्थरों की पूजा करते हैं सभी,

पर इंसान की पूजा करता है कोई–कोई।

अमीरों को रोटी पूछते हैं सभी,

पर भूखों को खिलाता है कोई–कोई।

सुखो में आती है दुनिया,

पर दुःखो में साथ निभाता है कोई–कोई।

चलने वालो के साथ कदम मिलाती है दुनिया,

पर गिरतों को उठाता है कोई–कोई।

यदि आप बन सकते हैं कोई–कोई

ते किस्मत भी जाग जाएगी सोई–सोई।

ऊषा रानी
सहायक अनुभाग अधिकारी
के0वि0सं0 मुख्यालय, नई दिल्ली

3
एकाकी

संध्या बेला जब सूरज चांद संग धरा के होते हैं
उर के छाले सहलाता हूँ बस एकाकी पल चाहता हूँ
.शाम ये जैसे जैसे गहराती है
आंखें भर देती नमी से होठों से हंसी ले जाती है।
अंतर्मन कोलाहल से भाग व्यथित
बस एकाकी पल चाहता हूँ बस चाहता एकाकी एहसास
– वो पल
जब अपनों से भरे आंगन से बिछड़ डोली में बैठी थीए
अनजाने परिवार में मैं बस निरह अकेली थी।
कहने को सब अपने थे पर अपनों से बिछड़ मैं आई थी
कैसे आंसू थामे कैसे मन को समझाया था
उस घर की धरोहर एहसास यही संग इनके रहने को
बस एकाकी पल चाहता हूँ बस चाहता एकाकी एहसास
– वो शाम
मौन स्थिर अपनी मां को धरती पर लेटे पाया जब
रूबरू होके भी हृद्य से ना उसने लगाया तब
अंतिम आर्शीवाद को उसका हाथ स्वंय ही था थामा
गीली भीगी वो शाम जब गहराती आती है
छुअन उन हाथों की करने को महसूस
बस एकाकी पल चाहता हूँ बस चाहता एकाकी एहसास
– वो पल

जब मां बनने का प्रथम सुखद एहसास हुआ
तन में नन्हें कदमों के आने का आभास हुआ
तब मन चाहता था मूंद के पलके
उसकी हर हलकी हलकी पदचाप का पल–पल सुखद एहसास करूं
धंटो रह कर एकाकी बस उसके संग मैं बात करूं
वो जो मेरा अपना था मेरे जिस्म से जन्मा था
ममता को तरसती बेटी को मां बना ममत्व से पूर्ण किया
उन पलों में जो महसूस किया वो बयां कहां कर पाता है।
बस एकाकी पल चाहता हूँ बस चाहता एकाकी एहसास।
यादें जो मेरी हर धडकन संग पांव पांव चली
कभी ख्वाबों की ताबीर बनी कभी हांथों की लकीर बनी
रहती है दिल के कोने में इक नन्ही किलकारी सी बन
एकाकी मन चाहता है मौन संग उनके रहना
बस एकाकी पल चाहता हूँ बस चाहता एकाकी एहसास।

उर्मिला रावत
वरि. सचि. सहायक
भर्ती एवं पदोन्नति अनुभाग
के.वि.सं. (मु.)

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

4
हन्त रे मनुष्यता !

वर्धते धनान्धता एलस्यते विलासिताए
दृश्यते न कुत्रापि, दुःखकातरता परार्थाय ।
मानव त्वम् हिरण्यगर्भ! स्व स्वरूपं स्मर,
कथं विपन्नमागतास्ति! हन्त रे मनुष्यता।

ज्वलति क्वचित् स्नुषा स्वश्वसुरैः स्वश्वश्रुभिः,
स्वपातकैः पुत्रकैः जन्मदात्री एव ताडिता।
अर्थ एव मातृ, पितृए अर्थाय एव बन्धुता,
कथं विपन्नमागतास्ति! हन्त रे मनुष्यता ।।

क्षिपन्ति भोजनं केचित् खादन्ति क्षिप्तं केचित्,
किं करिष्यति बुभुक्षा, सर्वत्रैव विषमता।
भवति कोपि तुन्दिलो कोऽपि जीर्ण शीर्ण गात्र,
स्थिति चरमापन्नम्! हन्त रे मनुष्यता ।।

भ्रातरौ अति युध्येते, राघवस्य जनपदे,
विक्रीणाति जनकनगरे, माता हाय! स्वसुता,
वित्त कर्म वित्त धर्म वित्त सर्वमस्ति अद्य,
कथं विपन्नमागतास्ति! हन्त रे मनुष्यता ।।

मानवेन वित्तैषणेन सर्वनाशोपस्थितम्,
संग्रहे निमग्नाः सन्ति राजा अस्तु वा प्रजाः
''ईशावास्यमिदं सर्वं'' विस्मृतम् हि अस्ति अद्य,
कथं विपन्नमागतास्ति! हन्त रे मनुष्यता।।

विलुप्यतेति प्रेम, दया, सौमनस्यमादरम्,
मा गृधः कस्य स्विद्धनम् मानुषेन विस्मृता।
पश्यतु वृक्षं, जलदं, नदीजलं, सागरम्,
ग्राह्यं केवलमेकमेव साधुता, मनुष्यता।

वर्धते धनान्धता एलस्यते विलासिता,
दृश्यते न कुत्रापि दुःखकातरता परार्थाय
मानव त्वं हिरण्यगर्भ! स्व स्वरूपं स्मर!
कथं विपन्नमागतास्ति! हन्त रे मनुष्यता ।।

जयन्ती नयन
केन्द्रीय विद्यालय सीटीपीएस चन्द्रपुरा

5
मन कहता

मन कहता मैं मेघ बनूँ
नभ–जल–थल सीमा पार करूँ
औ स्वप्न देश होकर आऊँ

मन कहता मैं पक्षी बन
वन–वन विचरूँ
औ गीत नया कोई गाऊँ

मन कहता नव–गीत बनूँ
जन मधुर–कंठ की स्वर–लहरी बन
प्रति जन–मन आलिंगन पाऊँ

मन कहता मैं पुष्प बनूँ
मुस्काऊँ कंटक बीच और
सुख–दुःख की परिभाषा बतलाऊँ

मन कहता मैं वायु–दूत बन
रवि झुलसे मनु–तरुवर को
मातृत्व–भाव से सहलाऊँ

मन कहता गिरिराज बनूँ
हिम–श्वेत–मुकुट सिर धारण कर
अमृत जल सरिता बिखराऊँ

मन कहता सरिता बनकर
कल–कल ,कल–कल ध्वनि–प्रतिध्वनि कर
धरती के अधर भिगो आऊँ

मन कहता ऋतुराज बनूँ
नित नव–रंगों की रचना कर
नव–वधु सा उपवन गढ़ पाऊँ

मन की सीमाएं हैं अनंत
मन की इच्छाएँ हैं अनंत
इस अनंतता के सिंधु बीच
मानव तन लगता बिन्दु सदृश

मनु माप रहा नित प्रति क्षण पल
इस जीवन की गहराई को
तन–मन की सीमा लांघ रहा
तज जीवन की तरुणाई को
मनु मन की गति है चाह रहा
सह जीवन की कठिनाई को ।

नितिन कुमार मिश्र
स्नातकोत्तर शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय
आर्मी मेडिकल कोर (ए एम सी) लखनऊ

6
कहीं शब्द इसे मैला न कर दें

अजीब कशमकश में हूँ आजकल
इक नया सा एहसास साथ रहता है
हर लम्हाए हर पल...

कुछ अनूठाए कुछ अदभुत
कुछ पाने की प्यास
कुछ खोने का एहसास

कभी झील सा शान्त
तो कभी पहाड़ी नदी सा चंचल
कुछ संजीदाए कुछ अल्हड़

क्या है ये अनजाना सा एहसास
भावों का ये कोमल स्पर्श
पता नहीं ... पर अपना सा लगता है

कभी जी चाहता है इसे इक नाम दे दूँ
फिर सोचती हूँ बेनाम ही रहने दूँ
मैला ना करूँ...
कहीं शब्द इसे मैला न कर दें ।

मीता गुप्ता
परास्नातक शिक्षिका (हिंदी)
के.वि.पू.रे., बरेली

7

भगवान मुझको पेड़ बना दों

तुमने बहुत दिया जीवन में
और जरा सी करुणा करदो
भगवन मुझको पेड़ बनादों
जड़ तो मेरी माता होगी
सारा जीवन पोषण देगी
पत्ते माँ की सुघड़ रसोई
खाना पानी दिया करेंगे
तना बनेगा पिता समुन्नत
खड़ा रहेगा तन कर हरदम
कोमल शाखाएँ हाथों सी
काम करेंगी दौड़ दृदौड़कर
झूला बन कर दुलराएंगी
दूर पास के सब बच्चों को
दूर घनी बस्ती से हट कर
धरती पर होगा मेरा घर
रोज़ सुहानी सुन्दर किरणें
दे देंगी नव जीवन मुझको
और बड़ा जब हो जाऊंगा

फल फूलों से लद जाऊंगा
ज़हर प्रदूषण का पी लूँगा
प्राणवायु दूँगा जीवों को
खा करके लाठी पत्थर भी
मैं सबको मीठे फल दूँगा
अतिथि पक्षियों को फल देकर
नित्य करूंगा स्वागत उनका
रैनबसेरा एकभी शरण दे
कभी घौसले बनने दूँगा
सहजीवी सब लता वृंद को
आश्रय देकर फलने दूँगा
दूर रहूँगा अमरबेल से
परजीवी घातक शत्रु से
बीज बनेंगे भावी बच्चे
त्याग और करुणा के सच्चे
बहुत हो गया इस जीवन में
अब तो मेरी विनती सुनलों
भगवन मुझको पेड़ बनादों ।

मेधा उपाध्याय
केन्द्रीय विद्यालय, खानपुर
रूपनगर (पंजाब)

8
औरत की सहूलियत

अश्क़ लाख छिपे हो
इन काली स्याह आँखों के पीछे
पर शिकस्त के भाव चेहरे पर न रखती ।

असीम वेदनाओं के सागर में
वह निरन्तर ही बहतीण्ण्ण
मग़र तटस्थ सबको बनाये रखती ।

तुच्छ लालसाओं का
दम घोंटकर वह
अपनों का लोक सँवारती ।

अपनों के प्रतिकार को
वह मन्द गति में
अपने ही प्रेम से दबाती ।

हर कटु व तीक्ष्ण नज़र से
बचने के लिए वह
मुँह फेरकर भी मुँह न छिपाती ।

औरत का औरत होने से
मतलब को वह
अपनी सहूलियत से निभाती ।

मनोज कुमार वर्मा
पीजीटी हिंदी
केंद्रीय विद्यालय रामवर्मपुरम

9
वासंती ताँका

चन्दन कुंज
स्वर्ण मंडप तले
खग विहग
गाए मंगल गान
दूल्हा वसंत आया।

फागुन आया
माघ ने ली विदाई
पेड़ों ने बाँधी
सब्ज हरी पगड़ी
नव वसंत छाया ।

फूलों से भरी
धरती की चूनर
हवा जो छेड़े
लहराए आँचल
पिय वसंत आया ।

हँसा गगन
शरमाई धरती
बोली दिशाएँ
भौरों की टोली संग
सखी वसंत आया ।

पंखों में सजा
इन्द्रधनुष प्यारा
तितली नाचे
देती फिरे संदेशा
अलि वसंत आया ।

काली कोकिल
कूके छुप–छुप के
देखे ना कोई
गूँजे मन की घाटी
गीत वसंत लाया ।

खिली कुमुद
भँवर ले बलैया
पंखुडी झूमे
गुन–गुन का गीत
गाओ वसंत आया ।

उड़े अबीर
फाग उड़े अंगना
गोरे कपोल
लाज से हुए लाल
होली वसंत लाया ।

कमला निखुर्पा
प्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय, पिथौरागढ़

10
नन्ही उंगलिया

जीवन का एहसास कराती
नई आशाओं को जगाती
जीवन को है राह दिखाती
नन्ही उंगलिया।।

कभी हँसती, तो कभी हँसाती
कभी खेलती, तो कभी खेलाती
जीवन को है राह दिखाती
नन्ही उंगलिया।।

घर से आँगन, आँगन से घर तक
कभी भागती, तो कभी भगाती
जीवन को है राह दिखाती
नन्ही उंगलिया।।

कभी रोतीए तो कभी रुलाती
आँसूओं को पोंछ कर हँसाती
जीवन को है राह दिखाती
नन्ही उंगलिया।।

राजीव रंजन
कला अध्यापक
के. वि. नामरूप पर्बतपुर

11
गुरु शिष्य परंपरा

भारत की संस्कृति का जब.जब गौरव गान हुआए
गुरु .शिष्य की परम्परा का तब.तब यशगान हुआ।
गुरुकुल की परिपाटी में,
गुरु को ईश्वर सम माना है।
गुरु ही दीपक एगुरु ही माँझी,
गुरु को औषधि तुल्य जाना है।
पर क्यों धूमिल हो रही यह गुरुकुल की परिपाटी,
क्यों सच्चे कर्मवीरों की राहए ताक रही यह माटी।
नैतिकता छिपी कंदराओ में, व्यावसायिकता ने साम्राज्य बिछाया है,
शिक्षा का यही रूप अब जनमानस में छाया है।
मौलिकता एनैतिकता का अभाव है,
घट रहा स्नेहिल स्वभाव और निरूस्वार्थ भाव है।
समय आ गया हैए मित्रों !
सोचो और विचार करो।
इस विकासशील भारत के लिए कुछ तो अर्पण और करो।
तुम उस बाल . तरु का निर्माण करो,
जिसमें शाखाएं हो नैतिकता की,
अनुशासन की जड़ हो,
पल्लव हो मौलिक उच्च विचारों के,
और पुष्पित हो वह कोमल सुमन समान।

डॉ. चारू शर्मा
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय
भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून

12

प्रकृति की कृति

सौन्दर्योपासक बन प्रकृति का,
हे नर! तूने रसपान किया।
इस अलौकिक कृति का,
अवलोकन बारम्बार किया।
हरित धरा हो या नीलाम्बर,
धवल अचल हो या सरसों का पीताम्बर।
इस इन्द्रधनुषी आभा को,
कविता में आबद्ध किया।
क्या भरा नहीं मन जो तुमने इसका दोहन,
एक नहीं सौ.सौ बार किया।
अपनी आशा .अभिलाषा के पूरण हेतु,
इसका मंथन हर बार किया।
बचपन में नानी कहती थी एक कहानी,
प्रकृति तो है कवियों की सुरमय बानी।
पर चला चक्र दोहन का इसी गति से,
तो काल करेगा नर्तन बनकर काली।
हे मनु के वंशज ! कुछ तो तुम विचार करो,
बनकर मीत तुम इस प्रकृति के नए रूप का संचार करो।

अवंतिका द्विवेदी
प्र.स्ना.शि. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून

13

ये क्यूँ है

रुख –ए– गुलज़ार पे, ये रंज सा, छाया क्यूँ है,
इन हवाओं ने मुझे पास बुलाया क्यूँ है ,
रुख –ए– गुलज़ार पे .....।

ए खुदा बख्शना, मुझको, मैं बताऊँ कैसे–2
उसके सजदे में, ये सर मैंने झुकाया क्यूँ है–2
रुख –ए– गुलज़ार पे .....।

जिसको चाहा है, उसकी ही इबादत मैं करूँ–2
अपने दिल को मैंने मंदिर सा सजाया क्यूँ है–2
रुख –ए– गुलज़ार पे .....।

यूँ तो है भीड़ बहुत, दुनियाँ के, वीराने में–2
जिस तरफ देखूं , लगे उसका ही, साया क्यूँ है–2
रुख –ए– गुलज़ार पे .....।

कौन कहता है, मैं अकेला ही चला जाऊंगा–2
अपनी आँखों में तेरी रूह को बसाया क्यूँ है–2

रुख –ए– गुलज़ार पे, ये रंज सा, छाया क्यूँ है,
इन हवाओं ने मुझे पास बुलाया क्यूँ है,
रुख –ए– गुलज़ार पे .....।

कृष्ण गोपाल
टी.जी.टी (पुस्तकालय)
केन्द्रीय विद्यालय चमेरा

14

एक हादसा

एक हादसा मिरे ज़ीस्त में दफ़अतन हो गया ,
मिरा नाम मिरे किस्मत की किताबों से खो गया।
नाज़ाने कितनी बार सिफ़र आया मिरे हिस्से में,
इस बार जो सम्त आया तो लाचार हो गया।

हसरतों को हर दफ़ा दिल ने दफ़न कर दिया मगर,
एक दबे पाँव आँखों से निकला , रुख्सार धो गया।
और महरूम तो तिरी कुर्बत से हम हमेशा से थे पर
ख़्वाबों में भी जब फुर्कत मिली तो मिस्मार हो गया।

ख़रीदें हमने खुद थे इस शहर की जश्न–ए–शब् कभी,
वक़्त ऐसा आया की ये दिन को भी बेज़ार हो गया।
और उन्स के रिश्तें में जहाँ पहले सब्र था, तस्कीन थी,
वो मरहला भी आया जिसमें इश्क बाज़ार हो गया।

जॉनी अहमद
टी.जी.टी. (शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा)
केंद्रीय विद्यालय, मिसा छावनी, असम

15
माँ–बाप का जीवन

मेरे सपनों को जो भी आकार मिला
माँ–बाप की मेहनत से ही हर बार मिला।

सूरज ने जब–जब अपनी तपस बढ़ाई थी
माँ–बाप की काया छाया बन आई थी।

याद है मुझको सर्दी की रातें जब बचपन मे सोता था
मेरे जिस्म पे कम्बल और उनपे कुछ न होता था।

जब–जब रोटी एक और लोग अनेक हो जाते थे
मेरा हिस्सा उतना ही रहता बाकी सारे कोर बट जाते थे।

छत की दीवारों से जब बारिश का पानी गिरता था
में तो ख्वाबों मे रहता माँ का आँचल हर दर्द सहता था।

जब–जब मेले मे जाता था खेल–खिलौने चाहता था
पैसे न होने का दर्द उनकी आँखों से समझ जाता था।

जीवन के इस दौर मे मैंने एक बदलाव तो देखा है
माँ–बाप की छाँया बिन जीवन का न रूप न कोई रेखा है।

मौसम चाहे कोई भी हो सर्दी हो या गर्मी हो
माँ–बाप को तपते ही देखा चाहे बदन में दर्द भी हो।

माँ–बाप का पूरा जीवन संघर्ष की एक कहानी है
जिसमें कुछ पाने की खातिर ढ़ली पूरी जवानी है।

प्रदीप कुमार
कनिष्ठ सचिवालय सहायक, केविसं.(मु.)

16
रूपांतरण

क्षण तो एक ही होता है
जब कोई कण,
सीपी के मर्मस्थल को
भेद जाए ।
मोती सा चमक जाता है ।
उतर जाता है अंतःस्थल में गहरे;
रूपांतरित होकर निखर जाता है।
जो था कभी चरणों में
वह
कहीं सर माथ धारण किया जाता है;
तो कहीं कर्णस्थलों पर शोभायमान होता है;
कुछ धारण कर लेते हैं उसे उँगलियों में,
ग्रहों की चाल बदलने के लिए।
मखमली डिबिया में सजता है सुनार की दुकान पर,
अपनी नाजुकता पर इठलाता हुआ।
सारा भेद रूपांतरण का है,
जैसे बदल जाता है कोई एक
अंगुलिमाल, वाल्मीकि या अशोक होकर।

नीलेश अग्रवाल
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, छिन्दवाड़ा

17
आस्था

एक अध्यापक हूँ मैं,

कई जन्मों से साधक हूँ.

उन तमाम मूल्यों का जिन्हे,

सभी मजहबों के लोग,

युगों से तलाश रहे हैंकृअपनी इबादतों के इल्म में।

मैंने कभी कोई स्वार्थ नहीं साधा,

साधा है तो बस एक साधना को ही साधा है,

जो एक मानव को इंसान के मुकम्मल जहाँन तक,

ले जाती है एक पगडंडी की तरह्।

हाँ सभी पदार्थों का दाता हूँ मैं,

लेकिन अपने लिए कभी भी,

किसी भी युग में नहीं मांगा,

मांगा है तो केवल,

हालातों से लड़ने,

आँधियों में अड़ने,

अभावों से झगडने के लिए,

अपार अपार आस्था।

मेरा कर्म बल पर नहीं,

आस्था पर खड़ा है,

किसी अदृश्य शक्ति से,

संचालित है यह,

युगों युगों से,

आस्था का शक्ति चक्र,

जिसने भी शिष्य बनकर पाया,

अडिग रहा, सफल रहा, नियामक रहा।

आस्था के बल पर

सुशील कुमार 'आजाद'
स्नातकोत्तर हिंदी शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय मॉस्को (रूस)

18
ऐ ज़िंदगी

सोचा था मैंने क्या, और ये क्या हो गया।
ऐ ज़िंदगी ये बता, तुझे ये क्या हो गया।।

आसमान जो रूठा, तो धरती ने सुलाया।
वसुंधरा जो रूठी, भला कौन है बुलाया।।

माना अगर अम्बर ने, कुछ दया भी दिखाया।
जीवन में मतभेद ने, बस त्रिशंकु ही बनाया ।।

माँ–बाप सम खुदा, जहां में मिलते हैं।
उन्नति के फूल बस, वहां पे खिलते हैं।।

त्रिशंकु बनने का जहां, कोई डर नहीं होता।
जीवन के आपा–धापी का, कोई असर नहीं होता।।

खुशियों को मिलकर जहाँ, सब गले से लगते हैं।
एकजुट होग़मों को भी, मिलकर अपनाते हैं।।

चलो रखें सर, बस मां–बाप की गोद में।
छोटा पेड़ महफूज़, सदा बड़े की ओट में।।

खुश नसीब हैं वो जिन्हें, माँ–बाप ने अपनाया।
उनकी हम क्या कहें, जिन्हें परे है हटाया।।

अक्सर पत्ते पेड़ छोड़, खुद नीचे गिर जाते हैं।
पत्ते कुछ चाह कर भी, न संग पेड़ रह पाते है।।

कहो ऐसे पत्ते पर, क्या करें हम दया।
ऐ ज़िंदगी ये बता तुझे, ये क्या हो गया।।

ऐ ज़िंदगी ये बता.....

दिनेश पटेल
स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय, आई आई टी, पवई

19
निज भाग्य-विधाता

किया करता जो हरदम काम,
सुबह होती न जिसकी शाम,
माने आराम को हराम,
सदा श्रम से ही नाता है,
वही निज भाग्य विधाता है।
हँसी होठों पर बल खाए,
पसीना माथे पर आए,
नहीं मेहनत से घबराए,
वही कुछ कर दिखाता है,
वही निज भाग्य विधाता है।
है जिसका कर्म ही पूजा,
सदा औरों का हित दूजा,
वतन का सच्चा वह सेवक,
स्वर्ग धरती पर लाता है,
वही निज भाग्य विधाता है।
करे निःस्वार्थ जो सेवा,
कर्म को ही, माने देवा,
सदा मानवता की रक्षा,
वही मानव कहलाता है,
वही निज भाग्य विधाता है। वही निज भाग्य....२।

डी. के. त्रिपाठी,
प्राथमिक शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय,
भारतीय राजदूतावास, काठमांडू, नेपाल

20
संस्कार

हम भारतवासी मिलकर,
नया लक्ष्य संधान करें।
महान मनीषियों का भारत,
फिर से विश्व गुरु बनें।

संस्कारों की शिक्षा से,
नव पीढ़ी निर्माण करें।
बन समाज के हित साधक,
नव भारत निर्माण करें।

निज गृह से शिक्षा मंदिर तक,
नव पीढ़ी मा निर्माण करें।
वेद, पुराण, रामायण, गीता,
आओ फिर एक बार पढ़ें।

संस्कारों की शिक्षा से,
भारत का कण–कण महकाएं।
"सर्वे भवन्तु सुखिनः" को,
फिर से घर–घर पहुचाएं।

फूलों से कोमल हृदय को,
मानवता के गीत सिखायें ।
आओ मिलकर देश बनायें,
आओ मिलकर देश बचायें ।

शोभा दीक्षित
प्र० स्नातक शिक्षिका (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, अलीगंज

21
सार्थक सफर के मुहाने

"सुनो
तुम्हारा पहाड़ से उतरना,
बल खाकर गुजरना,
कलकल हँसी से,
उछलते शुभ्र दांत से कण
हरियाली के किनारों का पल्लु,
कहीं तंवंगी तो कहीं अल्हड़ सा मचलना ।
सच कहो कहाँ से सीखा है ये सब,
सुनो, सच सच कहो
नदी तुम खामौश क्यों हो?
तुम्हारी ये लहरे और किनारे
मेरे जीवन की अभिलाषा,
जैसे क्यों हैं?
एक गतिशील तो दूसरा स्थिर,
मेरे अंतर्मन के भाव लहरे हैं
मगर इरादे अटल किनारे से हैं।
नदी तुम मेरे अस्तित्व की तरह,
आदि अनादि काल से बह रही हो,

सोचता हूँ कितनी अकेली हो तुम,
चाँदनी रात में भी तुम्हारा सहर्ष समर्पण,
निरंतर गति देता नजर आता है,
मेरे अपने जीवन की तरह ।
नदी तुम जीवन हो
जीवन ही हो तुम सदा से,
पहाड़ों से उतरता,
बल खाता हुआ तुम्हारा ये जीवन,
मर्यादाओं के किनारों के बीच,
सच्चाई से रुबरू होकर,
यथार्थ के सागर की तह तक
तुम्हारे सार्थक सफर के
मुहाने पर आज भी मैं हूँ ।

कुमार विनायक
प्राथमिक शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय मॉस्को

22
चाक, बोर्ड और प्रयोगशाला

कभी कभी अकेले में,
मैं और मेरा किरदार,
बहस में पड़ ही जाते हैं।
बहस कोई कोर्ट का मसला नहीं
बस दैनिक जीवन का संघर्ष और सच।
मैं भौतिक पदार्थों की तह में,
जांचने लगती हूँ खुद को,
जिसका वजूद है मगर होगा नहीं,
मुक़मल नहीं ही होगा।

नश्वर है सब,
बस चाक, बोर्ड और भौतिक संसार के
पैमाने को नापते नापते रह जायेंगी,
मेरी उंगलियाँ और आँखें,
सोचती हूँ क्या यही सच है,
जिसके बीच मैं कई वर्षों से,
घटा जोड के अवयवों में,
उलझकर दे रही हूँ नश्वर ज्ञान,
कुछ हो न हो एक तो सच है।

चाक, बोर्ड और प्रयोगशाला,
जिसके अंदरूनी रूप में
उभरते हैं बस
साधन, साध्य और संसार,
जिसमें इंसानियत को निकाल पाने में,
सफल हो सकी।।

श्रीमती भारती पिल्लै
प्राध्यापिका भौतिकी,
केंद्रीय विद्यालय मॉस्का

23
गुजारिश

जीवन बिता देते है लोग,
महज एक आशियाना बनाने में।
लेकिन, तुम हो कि चूकते नहीं,
बस्तियाँ उजाड़ने में।
विचारों की इस लम्बी कतारों में,
ज्ञान ही अस्त्र है,
ग्रन्थ ही शस्त्र है।
अश्कों से भीगे इन
गालों की महज इतनी सी कहानी है,
जो सूख गया वह मोती है,
जो बह गया वह नितांत पानी है।
ज्ञान कहता है सांसारिक जीवन से ऊपर उठ जाओं,
मनुश्यता कहती है दुःख में किसी की ढाल बन जाओ।
न बना सकों किसी को,
तो कम से कम बिगाड़ो न किसी को।
इतनी सी गुजारिश है मेरी बस सभी से,
फूल बन बिखर जाओ पथ में सभी के।
इतनी सी गुजारिश है मेरी बस सभी से,
दिया बन रोशनी बन जाओ सभी के।

अमिता राज
केन्द्रीय विद्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे रोड
इज्जतनगर, बरेली

24
पिताजी

माँ तुम जड़ जैसी
पर इतना भी सच है
तने से पिताजी है।
पोषणा पल्लवा तुम
वे झंझावत के प्रतिहारी
वत्सला मंजरी तुम
वे सुद्रढ़ शक्त संवहनी
बिन्दुनिपात पीड़ तुम
वे सूखी कडवी कुनैन छाल
आकार हो तुम जीवन का
वे जीवन का आधार है
थाप हो तुम लोरी की
वे संदर्शक तमाच है
माँ तुम जड़ जैसी
पर इतना भी सच है
तने से पिताजी है।

मनीष कुमार विजयवर्गीय
प्राथमिक शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय, बी एन पी, देवास

25
छोटी लड़कियों के सपने

छोटी लड़कियों के सपने में आता है
एक खूनी पंजों वाला राक्षस
जो तोड़ देता है उनके खिलौनें
खुरच देता है उनका नरम बदन
लूट लेता है उनका विश्वास

वह सहमकर दुबक जातीं हैं माँ की छाती में
मां की छाती में है रेलवे ट्रैक
जिस पर धड़धड़ात हैं आशंका की गाड़ी
गाड़ी में बैठा है एक खूनी पंजों वाला राक्षस

छोटी लड़कियाँ सोती हुई माँ को नहीं जगाती
वो सो जाती हैं करवट बदल कर।

डॉ. ऋतु त्यागी
पी.जी.टी हिंदी
केंद्रीय विद्यालय, सिख लाईंस
मेरठ कैंट

26
आमंत्रण

वनभोज से लौटते समय
आमंत्रित कीजिए उस वनवृक्ष को
भोजन पर अपने घर

आपकी एकदिवसीय उत्पात ने
जिसके एकांत में
कई दिनों का व्यवधान उत्पन्न किया है

आपके द्वारा ज्वलित आग और धुएं ने
उसकी चेतना भ्रमित की है
अब असमर्थ हैं उसकी पत्तियाँ
संश्लेषित करने में प्रकाश
कुलबुला रही है उसकी शिराएं
माईग्रेन से कांप रहा है उसका शरीर

उसके भीतर का चौका सूना है
भूख से व्याकुल है उसकी अंतड़ियां

मात्र औपचारिकता वश
आमंत्रित करें उस वृक्ष को
अपने किसी कुलदेवता की भांति

जिसकी नाभी में कील ठोककर
टांगा अपना थैला
घायल की उसकी नाड़ियाँ
रस्सी की रगड़ से

समय निकालकर
पूछो उसका समाचार हाल
पोछो उसके छाल से बहता रक्तस्राव

वृक्ष भावुक और विनम्र होते हैं

भावुक इतने की
हफ्तों संजोए रहते हैं
अपनी सबसे वृद्ध टहनी को
उसकी मृत्यु के पश्चात भी

विनम्र इतने की तुम्हारे एक ढेले से
झर जाते है फुल बनकर
कुरेदने देते है अपनी मिठास
गिलहरी और सुग्गों को

ईश्वर, बुद्ध, दस्यु और गड़रिये
सबको एक समान विश्राम है इसके तले

हाथ पकड़कर तबतक आग्रह करो
जबतक वो हांमी नही भरता
संभवतः वह स्वीकारे तुम्हारा निमंत्रण
त्याग कर अपना संकोची स्वभाव

बिठाओ अपने उसी आंगन में
जहां से निर्वासित किया था तुमने उसे
पांव धुलो उसके
गमछे से पोंछकर देखो उसकी धुंधली आँखें

मगर ऐसा करते ही
तुम पुनः खो बैठोगे उसे

वो लौट जायेगा वापस उसी बीहड़ में

क्योंकि वो सहजता से पहचान लेगा
तुम्हारी असहजता
और तुम्हारे घर की सजावट में
अपने पुरखों की अस्थियां

परमानन्द
टी.जी.टी (कला शिक्षा)
केन्द्रीय विद्यालय, टाटानगर

27

आत्मावलोकन

आओ अन्तर को पहचाने, आओ अन्तर को पहचाने।
स्थूल जगत से सूक्ष्म जगत में दृष्टिपात हम डालें।।
आओ अन्तर को .....

मैं अच्छा हूँ और वह बुरा ,मानसिकता से स्वयं को तारे।
सबको अच्छा मान जगत में नया प्रतिमान बनाएं।।
आओ अन्तर को .....

कोई नहीं है पूर्ण जगत में कटु सत्य ये जानें।
जहां दिखे तम ज्ञान चक्षु से उज्ज्वलता फैलाएं।।
आओ अन्तर को .....

ईर्ष्या, कटुता, छिद्रान्वेषी, प्रतिद्वन्दिता त्यागें।
स्व की स्व से हो स्पर्धा, स्व अनुशासन जानें।।
आओ अन्तर को .....

पर सेवा कर्त्तव्य हमारा, जीवन लक्ष्य ये माने।
मानव से देवत्व वरण हो वृत्ति आसुरिक त्यागें।।
आओ अन्तर को .....

हर मानस विशिष्ट है जग में, ईश रचित सब जानें।
प्रेम सूत्र है सब बंधन का, भाव जगत में प्रसारें।।
आओ अन्तर को .....

प्रमोद कुमार शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, टोंक (राजस्थान)

28
दीप ऐसा जलाओ

दीप ऐसा जलाओ धरा पर सभी,
हर तिमिर के लिए वह महाकाल हो,
हर कली अपनी रंगत से खिलती रहे,
हर चमन और बागवां खुशहाल हो।

बैर–नफ़रत का अँधेरा धरा से मिटे,
प्रेम–मैत्री का सुन्दरदृसा संसार हो,
भाई–भाई के जैसे मिले हर कोई,
जाति–मजहब का कोई न व्यापार हो।

रोशनी ऐसी फैले तिमिर–नाशिनी,
ज्ञान का बस पसारा धरा पर रहे,
गान पक्षी के भौरों की गुंजार से,
है चहकता यहाँ का सवेरा रहे।

गीत मंगल के गाये हवा झूम के,
रात भी न किसी की गुनाहगार हो,
ऐसी खुशियाँ भरी ये दीवाली रहे,
प्यार ही प्यार के सब तलबगार हों।

डॉ. हृदय नारायण उपाध्याय
स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय 9, बी.आर.डी. पुणे

29
युवती मीरा

प्रेम की पीर का तुम पर्याय हो
विश्वास समर्पण की पराकाष्ठा हो
कृष्ण की दीवानी मीरा.. मीरा..मीरा
नहीं.. नहीं.. सिर्फ यही तुम्हारी पहचान नहीं
तुम केवल भक्तिन नहीं हो मीरा तुम मशाल हो
जिसने 500 वर्ष पूर्व इस देश में,
नारी मुक्ति आन्दोलन की ज्योति जला कर
हजारों स्त्रियों को चिंगारी बनाया
तुम वो स्त्री हो जिसने सर्वप्रथम
अपनी निजी स्वतंत्रता के लिए विरोध की आवाज़ बुलंद की
तुम सच मुच आधुनिक हो मीरा .....
तुमने कभी पर्दा नही किया
तुम सती नहीं हुई
तुम रानी होकर भी महलों से निकली अकेली
मन किया तो अपने प्रीतम को रिझाने के लिए गाती हो
और कभी मस्त होकर पैरों में घुंघरू बांध कर नाचती हो
विष का प्याला हँसते–हँसते पीती हो
तुम रैदास को गुरु बना कर समाज को अंगूठा दिखाती हो
"राणों म्हारो कांई कर लेसी....."कह कर
मेवाड़ के महाराजाधिराज को ताल ठोक कर ललकारती हो

अपने गिरधर के लिए वृन्दावन – द्वारका तक पहुंच जाती हो
कहाँ से भरकर लाई इतना साहस!!
तुमने कभी नही सोचा कि 'लोग क्या कहेंगे'
किसी ने तुम्हे बावरी कहा किसी ने कुलनासी
पर तुम्हे तो बांसुरी की धुन सुनने से फुर्सत ही कहाँ है
ऐसा कौनसा रस है तुम्हारे पास
जिससे महारानी का वैभव भी फीका पड गया?
तुम वो चलती दृफिरती लपट हो मीरा
जिससे कोई टकराए तो तुम उसे अपना रूप दे देती हो
मीर...मीरा...मीरा तुम धन्य हो
तुम से जो धारा निकली आज वो खल–खल
करती नदी का रूप ले चुकी है .....
नारी मुक्ति आन्दोलन के इस प्रवाह में
संघर्षों से झूझ कर आज कई धाराएँ मदमस्त बह रही है
तुम केवल भक्तिन नही हो मीरा मशाल हो.... मशाल हो।

अपराजिता
पी.जी.टी. (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, कलावाड रोड, राजकोट

30
परिवार

हिमालय का उत्तुंग शिखर शुभ्र व शीतल होता है,
हरित पादप, परम औषध, शुद्धतम वायु देता है।
ना जाने कितने लोगों की पिपासा ये बुझाता है,
मेरी मानो तो ये परिवार, सुख का आगार होता है।।1।।

नदी की ये कल कल ध्वनियाँ, सभी में प्रेम से बहना,
थकावट, श्रांतता, अवसाद, सभी के दुखों को सहना।
मगर कुल जग जैसी शान्ति, परम शान्ति, परम आनन्द,
मेरी मानो तो ये परिवार, स्वाति नक्षत्र सा होता है।।2।।

कुलों की भूषणता है जो, सभी की सुन्दरता है जो,
दिवाकर भास्कर सा शोभित, परमज्योतित सा करता जो।
हँसी उसकी परम सुख है, सदा दिल में सदीच्छा है,
मेरी मानो तो ये परिवार, गंगा सा पावन होता है।।3।।

फूल की खूशबू जिससे निम्न, जलों की शुचिता जिससे निम्न,
तारकों की द्युति भी है निम्न, हिमालय की पावनता निम्न,
करे जो भूषित कुल कुल को, परमानन्द की सीमा जो,
मेरी मानो तो ये परिवार , मास सावन सा होता है।।4।।

डॉ॰ वेदप्रकाश गर्ग
प्रशिक्षित स्नातक संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय मसूरी

31
गीत अभी तक ज़िंदा है

कैसे अलग करोगे बोलो
साँसों का बाशिंदा है,
सतयुग त्रेता द्वापर बीते
गीत अभी तक ज़िंदा है।

लाख यत्न सब करके हारे
चलती हैं इसकी साँसें,
रोक न पाई दुनिया इसको
भले लगाईं पग फाँसें।
बधिक पाश में कभी न फँसता
ये आजाद परिंदा है।।
गीत अभी तक ज़िंदा है।

साथ नहीं थी खिड़की कोई
सदा दरारों से ताका,
माल पुआ की बातें छोड़ो
करता आया है फाका।
गिला नहीं गैरों से कोई
अपनों से शर्मिंदा है।।
गीत अभी तक ज़िंदा है।

भीड़ भरी दुनिया की महफिल
रहता है तन्हाई में,
चलने लगतीं थमती साँसें
यादों की पुरवाई में।
सदा प्रशंसा समझ जिया है
तोड़ न पाई निंदा है।।
गीत अभी तक ज़िंदा है।

बिपिन पाण्डेय
पी. जी. टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय नं. 2
बी. ई. जी. एण्ड सेंटर,रुड़की

32
बलिवेदी पर नारी

कायरपुरुषों हमें बताओ
कब तक और सताओगे
अपनी ही माँ–बहनों से
तन की कब तक भूख मिटाओगे

अनगिनत कन्याएँ प्रतिदिन
बलि वासना की चढ़तीं
नन्ही कोमल दृकलिकाएँ भी
नहीं दरिंदों से बचती

क्या नारी का जन्म पाप है
इसका भी विश्लेषण हो
नर का हर कुकृत्य माफ है
इसका भी विश्लेषण हो

हीन भावना से जकड़ा नर
अन्तर्मन से हीन है
निर्माणी होकर भी नारी
उसके आगे दीन है

धनलोलुपता, तनलोलुपता
का कैसे प्रतिकार करे ?
अपना कहलाने वालों से
होकर दीन पुकार करे

जब तक अबला बनी हुई
वह यो ही दबती जाएगी
तब तक बलिवेदी पर नारी
यो ही चढ़ती जाएगी

डॉ पूनम वाशिष्ठ
स्नातकोतर शिक्षिका (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय ई.एम.ई.
वड़ोदरा

33
वो एक मज़दूर की बेटी है ।

उसके कपड़ों से नहीं लगती मग़र ,
सच में नन्ही परी तो है ,
आँखों में विश्वाश की आभा नहीं तो क्या ,
चेहरे से रूहानियत झलकती तो है ।
वो एक मज़दूर की बेटी है .....

क्या भविष्य उसका अंधेरमय होगा ?
सफ़र फूलों से नहीं काँटों से भरा होगा ?
हैं सवाल बहुत से घेरे हुए,
अपार सम्भावनाएं मग़र झलकती तो हैं ।
वो एक मज़दूर की बेटी है...

उसके चेहरे पर मुस्कान ला देना ,
मुश्किलों से जूझना सिखा देना,
इससे बड़ी कोई और पूंजी नहीं,
ज्ञान का भंडार उपहार दे देना ,
वो एक मज़दूर की बेटी है ...

तुम्हें लोग कहते राष्ट्र –निर्माता ,
कहते तुम जलते रोशनी के लिए ,
अंश भी अगर सच है इसमें ,
इन नन्हें कदमों को रास्ता दिखा देना ,
वो एक मज़दूर की बेटी है ...

पिता दिन भर मज़दूरी करता होगा ,
तब कहीं घर का गुज़ारा चलता होगा ,
होंगें अरमान दिल में बहुत सारे ,
जिनको बड़ी शिद्दत से संजोता होगा ,
शिक्षक हो तो इतना कर देना ,
अपना फ़र्ज़ ख़ुशी से निभा देना ।
वो एक मज़दूर की बेटी है ...

सशक्त भारत का सपना साकार होगा ,
ग़रीब को भी अगर शिक्षा का अधिकार होगा ,
सिर्फ स्कूल आना जाना नहीं ,
वास्तव में शिक्षा का संचार होगा ,
यह सारांश मन में बसा लेना ,
उसे तुम सशक्त बना देना ।
वो एक मज़दूर की बेटी है ...

चमन लाल
प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक अंग्रेजी
केंद्रीय विद्यालय सैंज

34
ऐसा कर्तव्य निभाया था

भारत माता के पुत्रों ने
ऐसा कर्तव्य निभाया था।
आजादी के दीवानों ने
अपना सर्वस्व लुटाया था,
प्राणों की बलि चढ़ा कर के
वीरों ने फर्ज निभाया था। भारत माता ...

भगतसिंह , आजाद ,बाल
खुदीराम, सुभाष, पाल
मंगलपाण्डे गुरु और लाल
ने नया तराना गाया था। भारत माता ...

यह ज्ञात हमें अज्ञात नहीं
सनसत्तावन के प्रथम समर में
लक्ष्मीबाई ने डटकर के
रण में कौशल दिखलाया था। भारत माता ...

कई माँ ने पुत्रों को खोया
कितनों के गए सुहाग उजड़,
उन वीरों के बलिदानों ने
शत्रु का दिल दहलाया था। भारत माता ...

हममें वह रक्त प्रवाहित है
हम सीमा पर डट जाएँगे,
यह याद रहे,भूलें न कभी
वीरों ने प्राण गँवाया था। भारत माता ...

आजादी की वर्षगाँठ पर
नमस्कार उन वीरों को,
जिनको इतिहास के पन्नों ने
अज्ञात बता ठुकराया था। भारत माता ...

विनोदानन्द कुमार
प्र.स्ना.शि. (संस्कृत)
के.वि. कमान अस्पताल

35
मंज़िल आने वाली है !

कुहासा छटेगा, माघ भी बीत जाएगा
भगवान भास्कर का भास्वर रथ आएगा
धीरे–धीरे जमी बर्फ भी पिघल जाएगी
शीत है पर पगडंडी ज़रूर नज़र आएगी

मुसाफिर! कदम बढ़ाते जा, मंज़िल आने वाली है।

बंद दरवाजों का खुलना तय है, खुल जाएंगे
कोशिश कर, हवाओं के रुख बदल जाएंगे
सीनाताने तैनात वृक्ष निरंतर बतलाते हैं
गर्मी– सर्दी से केवल बुज़दिल घबराते हैं

हौंसलों को लगाम मत लगा, बहार आने वाली है ।

हो सकता है, कुछ साथी थककर बैठ जाएँ
बढ़ते हुए कदमों की गति धीमी कर जाएँ
पीछे मुड़कर देखना, लक्ष्य से भटकना है
खुद के प्रयत्नों से बाधाओं से निपटना है

संघर्षों से, किस्मत की बंद ताली खुलने वाली है।

धीरज रख! पहाड़ में भी सुरंग बन जाएगी
माँझी की, मुरझाई आशा लता ज़रूर लहराएगी
मरुस्थल में भी बालक बसंत की किलकारी गूँजेगी
मधुमास मुस्काता आएगा, काली कोयल कूकेगी

उदास क्यों होते हो? अच्छी खबर आने वाली है।

अयोध्याप्रसाद द्विवेदी
प्र. स्ना.शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय, आयुध निर्माणी, अंबरनाथ
(द्वितीय पाली) ठाणे

36
करुण-याचना

हे मानव मन को मार्मिक कर
उत्तम चिन्तन को हो तत्पर।
जिससे जग में सौहार्द बढ़े
वैश्विक पथ पर निज मान बढ़े ।।1।।

नहीं छवि कुशल वैश्विक पथ पर,
विकसित भारत पर धब्बा है।
भूखे मरते ननिहालों का
यह देश, जाति पर लड़ता है।।2।।

ऐसा ही एक अकिंचन था
जिसके कोई आगे न पीछे था।
दो जून की रोटी मुश्किल थी
कुटिया भी उसकी चूती थी ।।3।।

घर घर के जूठन का आदी
कच्चा हो सड़ा हो या बासी ।
मन मार पेट पूर्ति खातिर
खाता घूरे का चुन चुन तृण ।।4।।

इस दुःखदारुण से मुक्ति को
वह गांव छोड़ जनपद आया ।
कुछ तथाकथित सम्पन्नों ने
कह, चोर उसे अति पिटवाया ।।5।।

यह देख विदीर्ण हृदय होता
सम सर्जक ईश पे शक होता।
कर सर्ग समय, संसर्ग सदा,
देकर निःशेष वरण करता ।।6।।

अपना धन वैभव सब उसको,
प्रेरित करता सब मानव को।
पथ हेतु प्रदर्शक बनने को
दुःखियों की सेवा करने को ।।7।।

सब मानव यह संकल्प करें
हो अंत सभी विपदाओं का।
दारिर्द्य बुभुक्षा और रुग्णता
संग में दुष्ट फिजाओं का ।।8।।

आशुतोष द्विवेदी
टी.जी.टी (संस्कृत)
केंद्रीय विद्यालय क्रं.–2, सतना

37

नया सवेरा नई पवन है!

नया सवेरा नई पवन है
नया हास उल्लास नया,
जीवन सबका नया नया हो
कर दो स्वामी मेरे दया!

कली कली में भ्रमर है गुंजित
पात पात पुलकित है पवन,
तृण तृण तुषार तृप्त तन राजे
कर्ण कर्ण मधु गीत श्रवण!

मन पुलकित मेरा कितना है
लख धरती सौंदर्य सुखद,
कर्म दृष्टि सब पूत हो गई
कण कण में समभाव वृहद!

धरती क्या लेती कब किससे ?
कितना दे देती सबको,
अंक उसी के पले बढ़े हम
नित्य नमन माँ है तुमको !

आज सबेरा नया नया है
पूत पवन संस्पर्श नया,
भाव बल्लरी स्पंदित पुलकित
मन मीत गीत ये सृजित नया!

विजयराम पाण्डेय
पी जी टी (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय अपर कैंप,
देहरादून

38
संकल्प

किसानों की याचना भरी कराहों से
महिलाओं, बच्चों की निर्जल निरीह निगाहों से।
जला यों की सूखी, दरकती मिट्टी की आहों से
तड़पते खेतों की मूक वेदनाओं से।
निकली प्रार्थनाएं असर दिखाने लगी हैं
नीले आसमान में बदलियाँ छाने लगीं हैं।
सर्द हवायें सूखे पत्ते बुहारने लगी हैं
मोर और वृक्ष नाचने और गाने लगे हैं।
टिटहरियाँ गाती हैं छटा भी निराली है
चारों तरफ हरियाली का असीमित विस्तार है।
पर भाहरों में अजीब आफत और जलभराव है
भाहरीकरण के असन्तुलन का असर दिखता है।
अब तो मकानों के भीतर भी जीवन भयभीत दिखता है
हर तरफ बाढ़, जल प्रलय भूस्खलन प्रतीत होता है।
आवश्यक जीवन की आवश्यकताऐं भी पूरी होना अतीत है
लकिन यह प्रलय पुरानी भूलों की याद दिलाती है।
हरियाली जलप्रबन्धन हमने स्वयं नष्ट किया है
पेड़ों को बस काटा अनियोजन किया है।
फिर भी यह संकेतक सचेतक काल है
मानव को एक मौका प्रकृति उसकी ढाल है।
न कटे पेड़ न असंतुलित विकास, यही प्रयास हो
पर्यावरण बचायें वृक्ष लगायें यही वैश्विक सेवा हो।

सुमन शर्मा
पी.जी.टी. (रसा.वि.)
केन्द्रीय विद्यालय इफ्फको, फूलपुर

39

चलो, एक और नया सूरज गढें

हाथ पर जंगल, नयन में है नदी।
प्रगति–पथ पर है, यह इक्कीसवीं सदी ।।1।।

खून में डूबे हुए, खंजर नये ।
दास्तानों की यहाँ, लम्बी गली।।2।।

भूख के कुछ बीज, अधरों पर पड़े ।
देखिए तो हर तरफ, सुरसा खड़ी।।3।।

पंख में बांधे हुए, आकाश को।
आदमी की लाश, चलती है सही।।4।।

'तत् त्वं पूषन अपावृणु' की शंखध्वनि ।
दे सकेगी क्या इसे, ऊर्जा नयी।।5।।

चलो, एक और नया सूरज गढ़ें।
दे जो इस धरती को, पूरी रोशनी।।6।।

एम. पी. त्रिपाठी
(टी. जी. टी. संस्कृत)
के. वि. नं. –1, वायु सेना केंद्र, गोरखपुर

40
नारी शक्ति

नारी ईश्वर की एक ऐसी अद्भुत रचना,
जिसके बिना अधूरा है जीवन का सपना।
नारी ही करती है इस सृष्टि का निर्माण,
जिसके मजबूत इरादों के आगे छोटा है पहाड़।
वो नारी ही है जो उठती है सूरज की पहली किरण के साथ,
और करती है पूरे दिन काम और केवल काम।
जो त्यागती है अपना आराम दूसरों के लिए,
और हंस कर सहती है सारे दुख परिवार के लिए।
वो नारी ही है जो होती है ममता की मूरत,
दिखे उसको हर बच्चे मे अपने बच्चे की सूरत।
वो बनती है मदर टेरेसा तो मिलता सबको सहारा,
वो बनी सावित्री तो उससे यमराज भी हारा,
वो छोडती है अपना घर जहां उसने बचपन गुजारा,
बनती है पति, सास, ससुर और ननद का सहारा।
न्योछावर करती सारी खुशियाँ अपनों के लिए,
वो बनती है अपनी गैरो के लिए।
वो नारियां हैं, जिन्होंने घर को घर बनाया है,
वो नारियां हैं जिन्होंने भारत को सम्मान दिलाया है।

एस॰ एस॰ एच॰ जैदी
एस.ओ.सी. (स्काउट्स),
केविसं (मु(;ाल;)

41
उजाले की ओर

मिटा दो निशा का अभी से अँधेरा ।
होने लगा है उषा का सवेरा।।

नयनों से टपके हैं सपने सजीले,
होठों से फूटे हैं नगमें लजीले ।
सजा लो जिगर पर गीतों की लड़ियाँ,
दिलों में मचलते हैं अरमान हठीले ।।

जला दीप! भरेगा दिलों में उजेरा ।
होने लगा है उषा का सवेरा ।।

उम्मीदें ये उनकी बनाएँगी राहें,
हैं थकती नहीं तुम्हारी ये बाहें ।
बुझा दो दिलों से नफरत की ज्वाला,
अपना बना लो अय आँखों की चाहें !

चमकने लगा है अंबर का तारा।
होने लगा है उषा का सवेरा।।

मिटा दो निशा का अभी से अँधेरा।
होने लगा है उषा का सवेरा।।

विनय कुमार तिवारी
स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय क्र.–3, भुवनेश्वर

42
बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ

यदि चाहते हो राष्ट्र निर्माण,
सारे देश में चलाओ बेटी पढ़ाओ अभियान।
घर की सब चहल पहल है बेटी,
जीवन में खिला कमल है बेटी।
कभी धूप गुनगुनी सुहानी,
कभी चंदा शीतल है बेटी।
शिक्षा गुण संस्कार रोप दो,
फिर बेटे सी सबल है बेटी।
क्यों डरते हो पैदा करने से,
आने वाला कल है बेटी।
मां की कोख से शुरू होकर,
पिता के चरणों से गुजर कर।
पति की खुशियों की गलियों से होकर,
बच्चों के सपनों को पूरा करने तक।
घर की सब चहल पहल है बेटी,
जीवन में खिला कमल है बेटी।
एक परिवार समाज ही नहीं,
राष्ट्र का निर्माण है बेटी।
बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ,
हर घर की मुस्कान है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।

अंजना शर्मा
टी.जी.टी (कला शिक्षा)
के.वी.न० 1, ए.फ.एस दरभंगा

43

ज़िंदगी फिर मिलेगी दोबारा कहाँ!

काम अच्छे करो, ख्वाब सच्चे करो,
ज़िंदगी फिर मिलेगी दोबारा कहाँ!
जन्म मानव का तुमको मिला भाग्य से,
ये कली फिर खिलेगी दोबारा कहाँ!

सेज़ फूलों की कब यह रही ज़िंदगी,
गम के साये से लिपटी मिली हर खुशी,
पाँव काँटों पर धरकर चलो राह में,
धूप को ओढ़ लो यूँ कि हो चाँदनी!

जिसने खुद पे, खुदा पे भरोसा रखा,
मुश्किलों से भला कब वह हारा कहाँ!

अब तलक तुम दुखी होके रोते रहे,
गर्म अश्कों से दामन भिगोते रहे,
इसलिए रूठते ही गए सब सपने,
ज़िंदगी बोझ–सी हाय, ढोते रहे!

सबको मुस्कान देने को आए यहाँ,
डूबकर तुमने इसपर विचारा कहाँ!

सत्य है, मुस्कराना कठिन काम है,
ज़िंदगी दर्द का दूसरा नाम है,
दुख के पर्वत से सुख का झरना झरा,
जिसने भी हिम्मत से लिया काम है।

सोच बदलो कि सबकुछ बदल जाएगा,
कि ये जीवन था अबतक प्यारा कहाँ!

गम किसी का भी लेकर खुशी उसको दो,
आप कांटे चुनो, गैर को फूल दो;
तेरे आँगन भी खुशियाँ बरस जाएँगी,
रोज़ देगा जब दिल से दुआ तुमको वो,

तभी दुनिया लगेगी हसीं हर घड़ी,
फिर तो जन्नत में भी वो नज़ारा कहाँ!

तुम हँसो और लब पर हँसी आएगी,
खुश रहो, हमसफ़र बन खुशी आएगी;
सच में जीने का मतलब समझ जाओगे,
ज़िंदगी प्यार की रागिनी गाएगी ।

नफरतों की जगह प्रीति–गंगा बहाओ,
इससे पावन धरा पर है धारा कहाँ!

रामस्वरूप पंडित
परास्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, चित्तरंजन

44

बदलता समय

आजकल कुछ बदलने लगा हूँ
खुद में ही सँभलने लगा हूँ
इससे जद्दो जहद में
अपने ही वजूद से बनाने
बनने की बदबू आती है
दम घुटता है ये सोचकर कि मेरा
असली "मैं" कहाँ खो गया
जब जीवन जीने का कोई
गुणा भाग ना था
"प्रेम व संवेदना" से सजा संसार
जिससे मुझे ही खुद प्यार था अपार
जाने क्यों
सब कुछ बदलना पड़ा
खुद के वजूद को कुचलना पड़ा
कुचलना पड़ा इस सोच को कि
"प्रेम व संवेदना को"
अब कोई प्रेम नहीं होना
बदलते समय के साथ
रिश्ते भी नेटवर्क में बदल गये हैं
जब जरूरत होती है तभी कनेक्ट होते हैं
दिखते तो हम इंसानों जैसे ही हैं
पर .....आदतों में रोबोट की तरह कनवर्ट हो गये हैं

डी. पद्मा नायडू
टी.जी.टी (सा. वि.)
केंद्रीय विद्यालय क्र.–2, नौसेनाबाग, विशाखपटणम

45
ऐ मेरे देश के शिक्षक

ऐ मेरे देश के शिक्षक,
आपको कोटि–कोटि नमन।
बचपन के पनघट पर,
स्वरों की रस्सी से,
तुतलाती बलखाती भाषा को
सार्थक तुमने बनाया है।
ऐ मेरे देश के शिक्षक,
आपको कोटि–कोटि नमन।
पाठशाला के पठन–पाठन को,
गूढ़ रहस्यों की अनबूझी पहेलियों को,
सुगमता से पगडंडियों को पार करना,
तुमने ही सिखाया है।
ऐ मेरे देश के शिक्षक,
आपको कोटि–कोटि नमन।
भटकाव की भट्टी में,
जलते हुए अरमानों को,
सलाह के शीतल जल से,
तुमने ही बुझाया है।
ऐ मेरे देश के शिक्षक,
आपको कोटि–कोटि नमन।
लक्ष्य के उत्तुंग शिखरों को,
छूने का हौसला,
टूटते मनोबल को अवलंबन का हाथ,

तुम्हारे सिवा किसी ने नहीं बढ़ाया है।
ऐ मेरे देश के शिक्षक,
आपको कोटि–कोटि नमन।

निराशा के गहनतम अंधेरों से,
असफलता की चुभती पीड़ा से,
हतोत्साह के घूमते भँवरों से,
तुमने ही बचाया है।
ऐ मेरे देश के शिक्षक,
आपको कोटि–कोटि नमन।

बहुत काम किया है तुमने,
अभी काम और भी पड़ा है,
समाज तुम्हारी ओर मूँह बाहे खड़ा है,
मानवता की लौ तुम्हे ही जलाना है।
ऐ मेरे देश के शिक्षक,
आपको कोटि–कोटि नमन।

बहुत कुछ दिया है तुमने इस देश को,
देश ने भी श्रध्दा आदर सम्मान दिया है,
इस परम्परा को निशदिन बनाए रखना है,
मानव जीवन में ज्ञान का चिराग जलाते जाना है।
ऐ मेरे देश के शिक्षक,
आपको कोटि–कोटि नमन।

दुर्गाबल्लभ शर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्रं, 5 मानसरोवर जयपुर

46
शक्ति का प्रतीक है नारी

नारी केवल एक शब्द नहीं, शक्ति का प्रतीक है नारी
भक्ति की केवल गूँज नहीं, अंर्तनाद की झंकार है नारी
अनेक रिश्तों की आशा और कई परिभाषाओं में बंधी है नारी
साक्षर, सुसभ्य, सुशील और सुसंस्कारी है नारी
अंतरिक्ष की ऊँचाइयों को कल्पना–सी छू रही नारी
विकासोन्नमुख समाज और राष्ट्र की रीढ़ है नारी
किसानी और मज़दूरी करके भी परिवार को पालती है नारी
खेल के मैदान में भी तो कम नहीं है नारी
मिथाली राज, कविता फोकट तो मैरी कौम है नारी
ज़ंगे मैदान में दुश्मनों के छक्के छुड़ाती है नारी
लक्ष्मीबाई, रज़िया बेगम तो जीजाबाई भी रही नारी
साहित्य में तलवार–सम कलम की तीखी धार है नारी
मीरा, सुभद्रा, महादेवी वर्मा, तस्लीमा, शिवानी, मृणाल पांडे भी हैं नारी
वेदों–पुराणों में ऋचाओं–सी समादरणीय है नारी
सीता–सावित्री, गौतमी, विश्ववरा, अनुसूया, गार्गी भी रही नारी
जल–थल–वायु और प्रशासनिक सेवाओं में तैनात है नारी
अवनि चतुर्वेदी, पुनिता अरोडा, किरण बेदी और अनिता पुंज भी रही नारी
निडरता–निर्भीकता की सशक्त आवाज़ है नारी
वर्णिका कुण्डू दृसी स्वाभिमान की आवाज़ बुलंद करती नारी

कोमलता, ममता, प्रेम–सी मानवीय संवेदनाओं का संस्कार है नारी
आज निजत्व की रक्षा हेतु फिर एक बार महिषासुर मर्दिनी बन तू नारी
अमर्यादित चरित्र को अब तुझे ही सुधारना होगा नारी
अब स्त्रीत्व की रक्षा के लिए रणचंडी तुझे फिर बनना होगा नारी
स्वतंत्र भारत में गर 'शहीदों का मान रखना है नारी
आन–बान–शान बन भारत का नया इतिहास रच तू नारी
सृष्टि, देश, समाज और परिवार की नींव तू ही है नारी
बदलते सभी संदर्भों का प्रत्येक रूप, स्वरूप और प्रारूप बस तू ही नारी
अनेक रिश्तों की आशा और कई परिभाषाओं में बंधी है नारी
सृष्टि का केवल एक सत्य, शक्ति का प्रतीक है नारी !!

डॉ. पंकज कपूर
स्नातकोत्तर हिन्दी अध्यापिका
के.वि. जतोग छावनी, शिमला

47
दिशाहीन

जीवन की धार–तटहीन
कुठिंत यौवन, बरसाता अंगारे,
अतेजस हो तकता जीवन की धार।

मॉ बाबू के संबल से हट्कर
शिथिल हो भटकता यौवन,
फिर कान्हा बन मदमाता
अल्हडता में यौवन की

पथ् विहिन सावन का अंधा
बिन बयार मुस्काता,
भटका यौवन जीवन पथ पर
विफल स्वयम को पाता।

अवसाद अंतस की परतो में
भावशून्यता लाता है,
जीवन की इस ऊहापोह में
अलग– थलग हो जाता है।

उदेश्य ढूढ्ता जीवन का
छोर कही न पाता है।
स्व ही स्व का भक्षक बनता
उद्देश्यहीन हो जीवन जीता

मर्म काल का देर से पाता
इस तरह से जीवन अवसित हो जाता
दिशाहीन हो जीवन अपना अर्थहीन बिताता
नर होकर भी नर पशु की संज्ञा मे वह आता।

भगवन मेरे दिशा
दिखाना दिशाहीन यौवन को
निस्तेज न होने पाए तेज और सामर्थ

काल ग्रसित यौवन नौका को
आत्मनिरिक्षण पतवार थमाना है
दिशाहीन से जीवन को
दिशामय बनाना है।

डॉ नीलू शर्मा
प्राथमिक अध्यापिका
के.वि., जतोग कैण्ट

48
परिवर्तन

जीवन मैं जब हो कुछ परिवर्तन
मन में आशाओं का नर्तन
बदला तो रूप खिला मन का
तत्काल हुआ कविता का सृजन
यूं सुन कर तुम हैरान न हो
निष्कारण मन परेशान न हों
ये तो जीवन की परिपाटी
इतिहास रहा इस का साक्षी
रुक गए तो फिर क्या जीवन है
चलते रहने से ही संभव हें।
मानव प्रकृति का अटल नियम
परिस्थिति अनुकूल सदा विचरण
झुक गए तो संग ज़माना है
यूं ठूंठ हुए तो कट जाना है।
परिवर्तन जीवन की है पहचान
सभ्यता विकास इस का प्रमाण
रुक जाए नीर तो कलुषित है
अविरल बहता गंगा जल है।
बहता पानी खुद राह बने
रास्ते के पत्थर चूर्ण करे
होती है यदि चट्टान उग्र

उतना ही हो आघात तीव्र।
झुक जाते पर्वत है इस के आवेग से
निश्छलता एवं लक्ष्य के संवेग से
जीवन में हो यदि अपना ध्येय सही
खुल जाते है सारे बंधन ठीक वहीं।
परिवर्तन तो है प्रकृति का नियम
माना तो प्रगति क्षण प्रति क्षण
जीवन का उत्तम मार्ग चुनो
फिर निर्भय हो कर उस पे चलो।
फिर देखो परिवर्तन के खिले रंग
जीवन में भर जाये उमंग।

विनीता नरूला
प्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय भा नौ पो
हमला, मालाड मुंबई

49
कहाँ चले जाते है वो लोग

कहाँ चले जाते है वो लोग
जो लौट के घर नहीं आते ..
दिन कटते देखते हैं शायद वो तारो संग टिमटिमाते

खुदा से भी अब है बस एक ही सवाल
तू जो लिखता है सबके कर्मों की किताब
कौन करेगा तेरे दिए जख्मों के हिसाब?

थी आँखों में मेरे भी सपनो के बाजार
पर अब है संग जिमेदारिया भी हजार
कैसे पूरी करूं मैं इन्हें खड़ी बीच मँझधार
जब मेरे अपने ही है तेरे घर कैद पर्वतनिगार..

खता थी अगर कोई तो कहते एक बार
यू किसी को छीन लेना अच्छी नहीं बात
पापा तुम बस एक बार तो लौट आओ ...
कहाँ चले जाते हैं वो लोग
जो लौट कर नहीं आते?

आकांक्षा जायसवाल
प्राथमिक शिक्षिका
के.वि. महाराजगंज, सीवान

50
मूल की ओर

के० वी० एस० ने शंखनाद कर, हमको आज पुकारा है,
ज्यों प्रस्फुटित नव ज्ञानांकुर, पाकर निर्मल धारा है,
चलो प्रबल बुनियाद बनायें, यह संकल्प हमारा है,
चलो नवल इतिहास रचायें, यह संकल्प हमारा है,
भाव, विचार, आध्यात्म, आचरण की, उन्नति ध्येय हमारा है।
सब मिलकर बुनियाद सँवारें, यह संकल्प हमारा है।

सोचा, मूल बिना क्या, कोई पेड़ बड़ा हो सकता है?
सोचा, नींव बिना क्या, कोई महल खड़ा हो सकता है?
जड़ ही सृजन दे तत्वज्ञान को, प्रबुध्द जनों ने बिचारा है।
चलो प्रबल बुनियाद बनायें, यह संकल्प हमारा है,

''यदैव विद्यया करोति, श्रध्दयोपनिषदा,
तदैव विर्यवत्तरं भवतीति" यह मूल मन्त्र उचारा है।
शिक्षक ही है पथसृजेता, सबने हमें निहारा है।
चलो प्रबल बुनियाद बनायें, यह संकल्प हमारा है।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो, विद्याभ्यासेन रक्ष्यते।
वेद, पुराणों, उपनिषदों की, ये शीतल अमृतधारा है।
''असतो मा सद्गमय, तत्त्वं पूषन अपावृणु
सत्पथ का अनुगामी हो, जो पथिक कभी न हारा है।
चलो प्रबल बुनियाद बनायें, यह संकल्प हमारा है।

है पुनर्जागरण, सूर्योदय, अज्ञान तिमिर मिट जायेगा,
शिक्षक–शिक्षार्थी संगठन का,निज दायित्व निभायेगा,
अंधकार, चहुँओर भले हो, सूरज कभी न हारा है।
चलो प्रबल बुनियाद बनायें, यह संकल्प हमारा है।

दीनदयाल की जीवंत कल्पना, है अनुपम जिनकी रीत,
आलोकित होगा पथ सबका, हो ज्योतिर्मय अविरल गीत,
हो व्यवहारिक ज्ञान हमारा, सतत प्रयत्न हमारा है।
चलो प्रबल बुनियाद बनायें, यह संकल्प हमारा है।

पूरब–पश्चिम उत्तर–दक्षिण जहाँ–जहाँ भी जायेंगे।
अलसायी कुम्हलाई मुरझाई कलियों को विकसायेंगे।
अंगांगी है भाव हमारा, समरसता बस नारा है,
चलो प्रबल बुनियाद बनायें, यह संकल्प हमारा है।

संकल्पों का साहस लेकर, आगे बढ़ते जायेंगे
"चलें मूल की ओर" मिशन ले पाकर लक्ष्य दिखायेंगे
हम गुरू–शिष्य सभी को, परमेश्वर का दिव्य सहारा है।
चलो प्रबल बुनियाद बनायें, यह संकल्प हमारा है।

चन्द्रावती महरा
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय, पिथौरागढ़

51
तुम नादान हो अभी

तुम नादान हो अभी
जानते नही ज़िंदगी की
गुस्ताखियां

रोते हो
तो पल भर में ढूँढ लाते हो
हँसी के टुकड़े
मैं तुम्हारी हँसी के वही टुकड़े
अपने बटुए में रखकर
रोज़ ले जाती हूँ अपने घर
और अपने घर की हवा में
घोल देतीं हूँ उन्हें

पर मैंने तुम्हारी हँसी के कुछ टुकड़े
संभालकर रख लिए हैं अपने
बटुए में

मुझे मालूम है कि आज
स्कूल से बेशक़ीमती दरवाज़े से
बाहर निकल जाओगे तुम

पर याद रखना
कि हर खुला दरवाज़ा
एक नई मंज़िल की तलाश है
इस रास्ते में बहुत से पत्थरों से
मुलाकात होगी तुम्हारी

उन पत्थरों से तुम टूटना पर
बिखरना नहीं
बिखरना तो समेट लेना ख़ुद को

और अगर ज़िंदगी हँसना भुला दे
तो पीछे मुड़कर देखना
मेरे बटुए में तुम्हारी हँसी के
वही टुकड़े
अभी सुरक्षित पड़े हैं
चाहो तो ले जाना उन्हें।

डॉ. ऋतु त्यागी
पी.जी.टी. (हिंदी)
के.वि. सिख लाईंस
मेरठ, उ.प्र.

52
बीज पेड़ बन जाएगा

संस्कारों के बीज डाल जब सत्कर्मों से सींचा जाएगा।
एक दिन ऐसा होगा जब बीज पेड़ बन जाएगा।

बच्चे तो कच्चे होते हैं
पर मन के सच्चे होते हैं।

सीखेंगे वो वही जो जग उनको सिखलाएगा।

मुश्किल पथ हो मंजिल का
साथ मगर हो हिम्मत का।

धीरे–धीरे चलकर ही रास्ता तय हो जाएगा।

स्वार्थ सकल है जग पर भारी
पर जिसने हिम्मत न हारी।

एक दिन ऐसा होगा पथ मंजिल बन जाएगा।

नामुमकिन कुछ भी नहीं अगर लगन हो पक्की।
कुछ भी पाने की खातिर मेहनत की राह ही सच्ची।

एक दिन हर बच्चा फिर भागीरथ बन जाएगा।

संस्कारों के बीज डाल जब सत्कर्मों से सींचा जाएगा।
एक दिन ऐसा होगा जब बीज पेड़ बन जाएगा।

साधना कुमारी सचान
प्राथमिक शिक्षिका
के0 वि0 न0–1 अर्मापुर, कानपुर

53
समर्पित

समर्पित है मेरा नम्र निवेदन,
जो संचालक है इस जग के।
फूलों में खुभाबू भर जिसने,
भौरों को मॅडराया है।
अंधकार को देकर जिसने,
ज्योति के दीप बनाया है।
समर्पित है .....

तारों की वह अमर कहानी,
गा–गा कर न गा पाया है।
अलग–अलग है मानव–मानव,
जिसने ऐसा संसार बसाया है।
समर्पित है मेरा नम्र निवेदन,
जो संचालक है इस जग के।

तन किभती देकर जिसने,
जीवन नदी बनाया है।
कभी किनारों पर लाकर,
कभी भॅवर में डुबाया है।
समर्पित है मेरा नम्र निवेदन,
जो संचालक है इस जग के।

मन–वीणा के तार को झंकृत कर,
जिसने मधुर संगीत गंवाया है।
मानव से क्या? पशु से–खग से,
निश दिन अपना यश फैलाया है।
समर्पित है मेरा नम्र निवेदन,
जो संचालक है, इस जग के।

कालचक्र का लीला देकर,
जिसने जग का रूप बनाया है।
अनैतिकता का सीमा न देकर,
जन–जन में भेद कराया है।
समर्पित है मेरा नम्र निवेदन,
जो संचालक है इस जग के।

कृष्ण मोहन चौधरी
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, साहिबगंज

54
एक व्यक्तित्व

एक व्यक्तित्व प्रभावित करता।
वाणी से अपनी, अमृत कानों में भरता।।
सागर सा अथाह, मन है जिनका।
गगन समान विशाल और विराट।।
जल समान पारदर्शी हमेशा।
जिससे मिलें, वैसे हों प्रकट।।
न कोई प्रशंसा, न अनुशंसा ।
न ही किसी को झुकाने की मंशा।।
खुद ही झुकें, फलदार वृक्ष से।
तरू समान दें छाया निशंसा।।
उनसे ही सीखा।
जीवन की भाषा, मीठी सी आशा।।
विश्वास खुद पर न कोई हो निराशा।
जो मिले उनसे, भर दें उसमें उल्लास।।
लगता है सब को, कि चाहे मुझे तो।
मुझसे ज्यादा किसी से न उनको है प्यार।।
बस उनसे मिलकर लगता है ऐसा।
वो हैं उदार, वो हैं महान, वो हैं विशाल, वो हैं विराट।।
समेटे हैं सबको, जो अपने हृदय में।
न धन की चाह, न गर्व की बात।।

है उनका बड़प्पन, मिलें सबसे अनुज सम।
हृदय की विशालता, छलकती अति उत्तम।।
सरल हैं, सफल हैं, सहज हैं, सबल हैं।
हर राही की राहों को करते सरल हैं।।
दुआ है सलामत रहें वो निरंतर।
और उन सा बने, मेरा भी अंतर।।
आप बनें जग में सभी के अंतर।
समंदर से अगाध, नदियों से निरंतर।।
देते हैं प्राणों को, प्राण वायु समान ऊर्जा ।
संसार में कोई उनसा न दूजा।।
उन्हीं ने सिखाया कि है सच्ची पूजा।
जे हो सामने, कर दो उसको ही ऊँचा।।
झुको तुम सदा ही, न इसमें बुरा है।
फलदार भााख ही छूती धरा है।।

दीपशिखा गढ़वाल
केंद्रीय विद्यालय
जी.सी.एफ.क्र. 2, जबलपुर

55
आशा

चलो ज़िंदगी एक बार फिर से शुरू करें
मुश्किल से मिलती है ये ज़िंदगी,
आओ जी भर के जियें
चलो ज़िंदगी .....
थोडा सा स्पर्श आकाश का
थोड़ी सी गहराई समुद्र की
थोड़ी सी मिठास पानी की
थोड़ी सी कटुता परेशानी की
जो कुछ टूट कर बिखर सा गया है,
उस कुछ को बलात अपनी मुट्ठी में बंद कर
दुनिया के सारे रंग जिंदगी में भरें
चलो ज़िंदगी .....
थोडा सा बचपन, थोडा सा हठपन
थोड़ी सी सच्चाई, थोड़ा सा गहरापन
सपने में यथार्थ है या यथार्थ में सपना ?
चिंतन का फ़लक, और आगे तक फैलाएं अपना
जीवन की धड़कन में सभी को मिलाकर
ज़िंदगी को बुने
चलो ज़िंदगी .....
ज़िंदगी जीने में हमसे न कोई भूल हो
जीवन यापन में हमारे भी कुछ मूल्य हों
गरीबी की सूरत में
मिटटी की मूरत में

मन में लेकर विश्वास,
थोड़ी सी स्पष्ट ये आकृति जीवन की करें
चलो ज़िंदगी .....
कल था हसींन आज है खुशनुमा
कल रोमांचकारी होगा, कौन जाने कल क्या होगा
आज कल में बदलता है, कल आज में बदलेगा
कल के बारे में क्या सोचना
जीवन का शेष यात्रा पथ नावोदित सूरज की
रक्तिम आभा से आलोकित करें
चलो ज़िंदगी एक बार फिर से शुरू करें

मनोज कुमार पाण्डेय
प्राथमिक शिक्षक (संगीत)
केन्द्रीय विद्यालय नं 3, वायुसेना स्थल
चकेरी, कानपुर

56
वृक्ष की व्यथा

तू पैदा हुआ मैं तेरा पालना बना
बरस भर में काठी का घोड़ा बना
गिल्ली डंडा बनाया मैं सह गया
डंडे नरों पे न चलाओ मुझे दर्द है।

पांच साल का होते ही शाला गया
पाठशाला जाते ही मैं पाटी बना
मुझ पर अक्षर उकेर नेत्र खुले तेरे
व्यर्थ कुल्हाड़ी न मार दर्द है मुझे।

पढ़ लिखकर बहुत बड़ा हुआ तू
कुर्सी बनकर तेरा प्रभुत्व बढ़ाया
विश्रामार्थ तेरी खटिया बन जाता
व्यर्थ न काटो खूब दर्द है मुझे ।

गृहस्थ जीवन में प्रगति कर तू
जब अध्यात्म की तरफ आया
ऋषि ऋण तुम्हें उन्मुक्त करने
अब मत जला गात्र दर्द है मुझे।

तुम काटना नहीं मुझे दर्द है
नर सोचो जरा कहां फर्क है
मैं भले तेरे साथ आता नहीं
आकार में ही थोड़ा फर्क है।

मैं देता तुमको स्वादिष्ट फल
बदले में कुछ भी नहीं मांगा
पत्थर से नहीं मारना मुझे
डाली न तोड़ना बहुत दर्द है।

सदा दी है तुमको ठंडी छांव
पसीने से नहा जब आते हो
निज स्वार्थ के कारण मुझ पे
न चलाओ आरी बहुत दर्द है।

तेरे पूजन के काम पूरा करने
मैंने रंगीन पुष्प अर्पित किए हैं
तुम ईश्वरभजन में रमना सीखो
मेरे फूलों को न रोंदो मुझे दर्द है।

डॉ भोला दत्त जोशी
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2
वायुसेना केन्द्र, पुणे, महाराष्ट्र

57
स्वतंत्रोत्सव

आज़ादी की वर्षगांठ मनाई जा रही है,
प्रगति का सिलसिला बंधा जा रहा है
ध्वहा–पताकाएँ कसी जा रही है,
शहीदों के सपने धँसी जा रहीं है।

एक था समय जब,कर्म ही था धर्म
है ऐसा भी समय अब, धर्म ही जो कर्म,
धर्म–कर्म के शर्म नाक सी इस विवर्तन मैं,
वर्म रहित हो उठी है मानव–सभ्यता।

अभावों के चंगुल मैं, फँसे–दबे मूल्य
बिक गए हैं बिना ही किसी मोल के
विषमता की वितानता मैं,
सिकुड़ी है मानव–चेतना।

जीवन की यही है विडंबना!
उचटती निगाहों के निदान मैं,
नर को नारायण मिलें कहाँ?
विज्ञान–यान मैं शांति बैठी ही कहाँ?

विधि का विपर्यास नहीं है रे!
मानव का रचा खेल है ये,
नव–गति की पनप के लिए
समय का सबक है सब।

जकड़ी है विध्वंसक क्रियाओं से जब
ऋण माँ का चुका क्यों न लें हम अब
नियति के थाथी को छाती से थम,
विगत सपनों को संवारेंगे हम।

आओ, मिल–जुलकर अमन के चमन को
निज सुमन से सजाएँगे हम, मिटेंगे!
पर वादा को मिटने न देंगे
नव–सृष्टि के भव्य–भावित को रचायेँगे।

स्वच्छंदता के सुअर्थ को समझ–समझाएँगे
देश–नमन–गान सदा गुनगुनायेंगे।
और फिर, आज़ादी के वर्षगांठ को
पुलकित मन से मनाते जाएँगे।।

राधिका नागराजन
पी जी टी–हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय, आर.डब्ल्यू.एफ.
यालहंका

58
तिरंगा ही मुझको कफ़न चाहिए

आज़ाद मुझको मेरा वतन चाहिए,
संस्कृति बस गंगो जमन चाहिए।
दौर कुर्बानियों का अब बंद हो
जन्नत में मेरे बस अमन चाहिए।
प्रार्थना, सबद, अजान, भजन और
मोहब्बत से रहने का जतन चाहिए।
आज़ाद मुझको मेरा ....
मजहबी आंधियां अब न आए कभी,
भाईचारे का बस चलन चाहिए
युवाओं का देश अगर कहते इसे हो
चंद्रशेखर, भगत सा यौवन चाहिए।
आज़ाद मुझको मेरा ...
सेक न कोई अब सियासी रोटियां
रहुमाओं से ऐसा वचन चाहिए।
देशहित में सब कुछ लुटा दूं मैं,
तिरंगा ही मुझको कफ़न चाहिए।
आज़ाद मुझको मेरा ...

ए. अ. सिद्दीकी
मुख्य अध्यापक
केन्द्रीय विद्यालय, झारखंड

59
शिक्षा की महिमा

शिक्षा की महिमा इस जग में अद्भुत और निराली है,
शिक्षा के प्रताप से ही पल्लवित सभ्यता–डाली है।
शारीरिक, मानसिक, आत्मिक या फिर हो भौतिक उत्थान,
शिक्षा पाकर मानवीय मूल्यों से भर जाता इंसान
प्राणों का हर तार–तार नर्तन करने लग जाता है,
शिक्षा से सारे समाज में नव परिवर्तन आता है,
शिक्षा सर्वोत्तम प्रसून है अरु शिक्षक जिसका माली है।
शिक्षा की महिमा इस जग में अद्भुत और निराली है।।
जो मनुष्य शिक्षित होते हैं कभी नहीं घबराते हैं,
हर मुश्किल को पलक झपकते ही परास्त कर जाते हैं,
शिक्षा है समाज उद्धारक भ्रष्टाचार मिटाती है,
सत्य, अहिंसा, प्रेमभाव का पावन पाठ पढ़ाती है,
शिक्षा बिन जीवन है सूना सब कुछ खाली–खाली है।
शिक्षा की महिमा इस जग में अद्भुत और निराली है।।
मिले सभी को शिक्षा का हर अवसर अपना नारा है,
पढने और पढ़ाने का पहला कर्तव्य हमारा है,
शिक्षा का अधिकार सभी को नर हो या हो नारी,
ज्ञान–पुष्प से पुष्पित हो सबकी जीवन–फुलवारी,
शिक्षा मानव को सुमुक्ति का मार्ग दिखाने वाली है।
शिक्षा की महिमा इस जग में अद्भुत और निराली है।।

डॉ. आनन्द कुमार त्रिपाठी
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी नालंदा

60
हिंदी के दीप जलाएंगे

हम हैं हिंदी के रखवाले, इसकी लाज बचायेंगे।
देश के कोने –कोने में, हिंदी के दीप जलाएंगे ।।

जब हम झगड़े जाति–धर्म पर, हिंदी बनी सहारा।
आज़ादी के दीवानों ने, इसी में था ललकारा।।

इसके सरल सुबोध रूप को, दुनिया तक ले जायेंगे।
देश के कोने –कोने में, हिंदी के दीप जलाएंगे।।

विविध रसों में कवियों ने, हिंदी में छंद सुनाये।
पढ़कर नाटक और कहानी, सबके मन हर्षाए।।

मगर कार्य है अभी अधूरा, पूरा कर दिखलायेंगे ।
देश के कोने –कोने में, हिंदी के दीप जलाएंगे ।।

दिनेश कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी)
के.वि. आर.डी. एस.ओ.
मानक नगर, लखनऊ

61
मित्रवर मजदूर!

चाँद से भी शीतल तेरा मन मजदूर!
पौरुष है सघन, सूरज से भी अग्रसर
रात व दिन में तुझे क्या अन्तर
सकल निर्माणों के कारण; मित्रवर! विश्वात्मा तुम हो सब के आधार।।
पसीने में खून बहता गया तेरा
बन गई बंजर जमीन उर्वरा
मानव को सहारा, दिया फिर किनारा
रहा बेसहारा मझधार में तू; हाय! विजन, निराश्रित, निराधार।।
पिस गया तू चलते इस पथ पर
पिघल गये तेरे अस्थि व पंजर
चूस गये चतुर खटमल व मच्छर
यथापूर्व तू रहा उपेक्षित; हाय! अनुपम, विसर्जित बारम्बार।।
पारग विश्वकर्मा तू बन सका था
बल प्रबल जब बाजूओं में भरा था
पत्थर, मिट्टीसे जूझते न जाने
बन गया पत्थर–सा शरीर तेरा; हाय! अपने नीयत में तू सदा बरकरार।।
रह सकें ईश्वर कहीं किसी के अन्दर
जीवन हो जिसका निर्मल गंगा की धार
'करतबआगे' तुम सिखाते हो धरापर
छिपा पीछे कर्म में संन्यास; हाय! अल्हड, निहायत् ईमानदार।।
असार है संसार पार करने का पतवार

कर्म ही पूजा निरन्तर जीवन का आधार
न कोई माँग, न हो फिर कभी अधिकार
काला अक्षर भैंस बराबर; हाय! तुम–सा बना कौन समझदार।।
खुद के लिए वे मूर्ख जीते स्वार्थ कूट कूट भरा
त्याग ही तेरा भोग है, प्रेम है तेरा नारा
पर स्मृतियाँ सबकी गुँजती, चिल्लाती
अपना एहसास निःशंक दिलाती; हाय! भूला विसरा–सा गया ओंकार।।

कुमार महापात्र
टी.जी.टी. (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.–३, भुवनेश्वर

62
कल और आज

लोग कहते हैं कि–
कल हम बहुत अच्छे थे,
गंवई साहबों से दूर,
अपनी छाया से बचाते हुए,
दोनों हाथ जोड़कर,
सामाजिक गरिमा को
ताक पर रख कर,
शोषित मजदूर जो थे।

लोग कहते हैं –
धर्म तार्किक विषय नहीं होता,
इसलिए धार्मिक अंधविश्वासों के लिए समर्पित थे,
मंदिर के बाहर ही,
भगवान को प्राप्त कर लेते थे।

शिक्षा एवं धन वाधित जो थे, इसलिए
गांव के बाहर गंदी बस्ती में रहते थे,
काली–कलूठी बस्ती में,
जीने का कोई वजूद नहीं था।

मजदूरी का रेट मालिक पर निर्भर था,
क्योंकि दुख–सुख में कर्ज लेते थे,
उनका ब्याज चुकाते–चुकाते,
बेटे को भी गिरवी रख जाते थे।

और आज
कुछ लोग कहते हैं,
हम अहंकारी (स्वाभिमानी) हो गए हैं, क्योंकि
मजदूरी तय कर रहे हैं,
धनोपार्जन के लिए शहर जा रहे हैं,
शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं,
संगठित हो रहे हैं,
संघर्ष कर रहे हैं।

अगर यह गलत है तो हम और
स्वाभिमानी बनेंगे,
शिक्षा ग्रहण करेंगे,
संगठित होंगे तथा
कबूतर और जाल की कहानी को चरितार्थ करेंगे।

जालिम प्रसाद
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, सीवान

63

ख़ामोश सफ़र

तितलियाँ, न जाने क्यूँ दिखाई नहीं देती हैं
कोयल की कूक ....सुनाई नहीं देती हैं,
हर तरफ रेत–ईंटों कि कतारें हैं
झूमते हरे पेड़, अब दिखाई नहीं देतें हैं!

मुहल्लों की गप–शप की परछाई, नहीं मिलती है,
चाय की चुस्की पे हंसी, सुनाई नहीं देती हैं,
भागते हुए क़दमों कि थरथराहट है,
आँखों में लड़कपन की चमक, अब दिखाई नहीं देती हैं!

पुरानी यादें, ज़ेहन में इस कदर समाई हैं
नए ज़माने की आवाज़े, सुनाई नहीं देती हैं!
खामोश सफ़र, उलझन भरे दिन है
अब तो, सपने भी, दिखाई नहीं देते हैं !

न जाने चाँद कब ढलता है, कब सूरज निकलता है,
बरसातों की आवाजों.... सुनाई नहीं देती हैं,
दौड़ती जिंदगी है, भागती रहे
अब तो, थमने को, कोई हाथ, दिखाई नहीं देता है

संगीता रघुवंशी
पी जी टी (अंग्रेजी)
केंद्रीय विद्यालय क्र.–2, फरीदाबाद

64
जीवन चक्र

भोर की पहली किरण
के फूटते ही निकल पड़ते हैं
पक्षी अपने नीड़ से बाहर
और कलरव करते हैं
प्रभात हो गई, प्रभात हो गई
और फिर चल पड़ते हैं
एक दिशा में पंक्ति बनाते हुए
दाने की तलाश में
वहीं प्रभात होते ही बच्चे बस्ता टाँगे
निकल पड़ते हैं घर से
विद्यालय जाने की आस में
और निकल पड़ते हैं मजदूर
अपने औज़ार टाँगे काम की तलाश में
सभी व्यक्ति अपने–अपने
घरों से निकल पड़ते हैं
दो जून रोटी की तलाश में
वहीं शाम होते ही लौट पड़ते हैं
पक्षीदृविद्यार्थी–व्यक्ति
अपने नीड़ में सुरक्षित
प्रभात और शाम के
इसी चक्र का नाम हैं
जीवन चक्र।

मोनिका एच॰ एस॰ नोटे
पी जी टी (अर्थशास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय, अंबाझरी, नागपुर

65
शिक्षक

तुम ग़ायब हो
शब्दों के बीच से
शब्दों की तमीज और तहजीब बरतने वाले।

तुम्हें ग़ायब कर दिया है बाज़ार ने
आदर्शों के प्रतिमान तले

शब्दों के लिए भी
आरक्षित करवा ली गयी हैं सारी सीटें
देश बड़ा है, कई मुद्दे हैं
मुद्दों में रोटियाँ हैं, सड़कें हैं, बिजली है, पानी है
और बहुत कुछ
हर तरफ़ शोर है, हलचल है
शब्दों के बीच स्थान बना लेने के लिए

सब्जियों के भाव बेचे जाने लगे हैं
विचार
मंडियों में 'आइटम' की तरह
एक ऐसे समय में
जब तुम हाँफ रहे हो
धोतियों के बीच फँसकर
और जबकि चाँप लिया है तुम्हें
धरती और आकाश ने मिलकर

और बाँध दिया है दसों दिशाओं ने
रचकर साजिश

कि हवा और पानी भी
तुम्हारे आदेश को ठुकरा देते हैं

इन प्रतिकूलताओं के बीच
तुम आज भी बाँट रहे हो ज्ञान
अँधेरे समय के बीच बैठकर
अंधकार से मुक्ति के लिए

उपग्रहों तक से किया जा रहा है मुठभेड़
खोदी जा रही है धरती
चीरे जा रहे हैं आकाश
और
ज्ञान की खोज के लिए गढ़े जा रहे हैं
नवीन शब्द
निरन्तर

और तुम
होते जा रहे हो ग़ायब
और स्थगित

निर्धारित कर दी गयी है एक तिथि
तुम्हारे लिए तुम्हारे सम्मान में
जिस दिन
कबीर किसी कोने में बैठकर
चुपचाप झाँकता है

तुम्हारी भींगी पलकों के भीतर
स्पर्श करता है तुम्हारे ज्ञान की कबीरी चादर को
और मुस्कुराकर थपथपाता है तुम्हारी पीठ

क्योंकि तुमने आज भी
सँभाले रखे हैं
बच्चों की नियति को
अपनी नियति से बाँधकर।

परंतु तुम ग़ायब हो शब्दों के बीच से
शब्दों के प्रणेता।

डॉ. राकेश रंजन
स्नातकोत्तर हिन्दी शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय
दानापुर कैंट

66
मेरा जुनून

ज़िक्र तूफानों की ताकत का किसके आगे करते हो?
मैंने उसके पहलू में ही अपने जुनून को पाला है।

संघर्ष कथा मेरी दादी की, उसकी दादी परदादी की
पुश्त–पुश्त दर आगे बढ़ते उनके सपनों और गीतों की
उनको डसने का दुस्साहस किसके आगे करते हो?
मैंने विष के प्यालों में भी हँसकर अमृत ढाला है!

सदियों से मेरा पहचान–पत्र करता रहा यही अभिव्यक्त
अबला, आश्रिता, अनुगामिनी, उपेक्षिता या हूँ परित्यक्त
इस शब्दकोश का उच्चारण अब किसके आगे करते हो?
मैंने ऐसे शब्दों को ही अर्थहीन कर डाला है!

वहशियत का घना जंगल है उगा, छटपटाता वजूद है दर्द घिरा
हर नुक्कड़ पर जलती सलाख खड़ी,भय के भूतों का घर बाहर डेरा
फरमान चुप्पियाँ धर लेने का किसके आगे करते हो?
मैंने अपनी आवाज़ों में इंकलाब को गाया है!

कहता है समय कि वह खुद को बदलेगा,
हर ज़ोर–जुल्म की माफ़ी माँगेगा
हाथ बढ़ाकर आगे अपना, उजली किरणों की उंगली पकड़ेगा
शोर अंधेरे की नस्लों का किसके आगे करते हो?
मैंने अपने गर्भ मे सूरज की फसलों को पाला है

प्रतिभा पाध्ये
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, आई. आई. एम. जोका

67
प्री-बोर्ड के बाद

अंकों पर मत जाना बच्चों, कर्मों पर जाना।
जो अंक मिले हैं; तुम्हें अभी, इससे नहीं घबराना है।
जो लक्ष्य बनाए हैं अंकों के, उससे भटक न जाना,
संतुष्ट तभी होना, जब साध्य भरे अंकों को पाना,
है सुझाव हमारा तुमको, तुम्हें सपनों के अंकों को लाना है।।
अंकों पर ...

अब जहां मिले कठिनाई, मिलकर उसे सुलझाना,
शत प्रतिशत का ही लक्ष्य तुम्हारा, इससे शिथिल न होना,
जटिल जटिलतम प्रश्नों को भी, हल करने पर ज़ोर लगाना,
हो भविष्य प्रणेता भारत के, तुमको मनोबल नहीं गिराना है।।
अंकों पर ...

हँसते–हँसते स्वीकार करो, श्रम को अंगीगार करो,
संघर्षों का है समय तुम्हारा, इससे न इंकार करो,
मंजिल है दूर तुम्हारी, अभी दूर बहुत जाना है।।
अंको पर ...

परिश्रम ही सफलता की कुंजी, मंत्र ये भूल न जाना,
जो संसाधन मिले सफर में, उनका लाभ उठाना,
सूझ–बूझ का पौध लगाना, अंहकार को दूर भगाना,
लक्ष्य से पहले मत थकना, वरना जीवन भर पछताना है।।
अंको पर ...

डांट–डपट कर क्या बतलाऊँ, समझदार को क्या समझाऊँ,
मिला सुनहरा अवसर तुमको, ये चुनौती स्वीकार करो,
शेष बचा समय है जितना, इस पर तुम उपकार करो,
हंसी–हंगामें, सेर–सपाटे, साथी–सगी, दिल की बातें,
इनकी महिफल फिर सेगी, कहकहों की ढोल बजेगी,
पर अभी तो परीक्षा वाली, धुन ही बजाना है।।
अंको पर ...

कंप्यूटर, ट्यूटर और फेसबुक, टी.वी. सीरियल धारावाहिक,
नहीं ये जीवन के ध्वजावाहक, नहीं शाश्वत सार्वभौमिक,
इनके अवसर फिर मिलेंगे, अरमानों के फूल खिलेंगे,
पर मिला समय जो पढ़ने का, इसे नहीं गंवाना है।।
अंकों पर ...

उदयराज सरोज
पी.जी.टी. (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय
रेंज हिल्स पुणे

68
हार ना मानो यूँ ही

इक लहर सी उठे मन में,जीतने के वास्ते,
हार ना मानो कभी, भले ही विकट हों रास्ते।
मंज़िले मिलती नही, यूँ भाग्य को कोसते,
कर्मरत हो अभी तू, विजय स्वप्न को पोषते।

तूफ़ां तुम्हें ये छेड़ेगा, सागर की मंझधार में,
कश्ती तुम खेते रहना, ले पतवार हाथ में,
भींच मुट्ठी, तान सीना, दृढ़ता रहे वार में,
फ़ौलादी शिला ढह जायेगी, थोड़े से प्रहार में।

कायरता ना दिखलाना, शांति के नाम से,
लक्ष्य तक ना तुम बैठना, कभी भी आराम से,
डिगना ना पथ से कभी, भय, भ्रांति, दाम से
हो भले कितनी बाधायें, चलते रहना शान से।

खींचना तुम अमिट लकीर, काल के कपाल पर,
विजयश्री तिलक करे, विधाता तुम्हारे भाल पर,
तेज ये अक्षुण रहे, इस धधकती ज्वाल पर,
मन सदा स्थिर रहे, श्वास में हो उबाल पर।

चलते रहे निरंतर यदि, कर्म को ईश्वर मान कर,
परिंदो से गर उड़ते रहे, पंखों पर ऐतबार कर,
पाओगे मंज़िल निश्चित, किस्मत को पछाड़ कर,
कर दोगे गुंजायमान गगन, सिंह सा दहाड़ कर।

अजेय रहे 'अजय', ऐसी विनती राम से,
विश्रांति मिले ना भले, अंतहीन काम से,
कारवाँ ये रुके नहीं, दृढ़ हो विजय के वास्ते,
हार ना मानो यूँही, भले ही विकट हों रास्ते।

अजय कुमार श्रीमाल
प्र.स्ना.शि. (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, बीएचईएल,
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

69
विदाई गीत

चले जा रहे हो भले छोड़ कर तुम
मगर जान लो हम भुला न सकेंगे

अनुशासन तेरा, कर्मनिष्ठा तुम्हारी
तुम्हारे चमन के भले चार दिन वे
कलेजे को छलनी किये जा रहे हैं
तुम्हारे मिलन के भले चार दिन वे

तुम्हारे वफ़ा की पड़ी जो निशां हैं
ह्रदय से हटा लें मिटा न सकेंगे
चले जा रहे हो भले छोड़ कर तुम

अभी शाख पर फूल खिलना बहुत था
मगर शोख तूफां ने लूटा चमन को
सितारे अभी झिलमिला ही रहे थे
कि काली घटा ने ढका कुल गगन को

रहनुमा, तुमने चाहा है कितना हमें
लाख चाहें बताना बता न सकेंगे
चले जा रहे हो भले छोड़ कर तुम

यह माना कि अब तुम रुकोगे नहीं
पर बढ़े जो कदम हैं बढ़ाते रहो तुम
खुदा से अरज हम करेंगे यही कि
जहाँ भी रहो मुस्कराते रहो तुम

हमें याद रखना या कि भूल जाना
मगर अब तुम्हें हम भुला ना सकेंगे
चले जा रहे हो भले छोड़कर तुम

डॉ० आर.सी.पोद्दार
पी.जी.टी. (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय,बी.एस.एफ.,किशनगंज

70

मैंने जीना सीख लिया है

गहनों कपड़ों की चमक,
मुझे अब नहीं ललचाती,
पायल के नूपुर और
पाँवों की महावर
मुझे अब नहीं रोकती
क्योंकि मैंने जीना सीख लिया है।

आँखों के कोर में रुके आँसू,
रुंधे कंठ में अटके शब्द,
कलाई की खनकती चूड़ियाँ,
मुझे अब नहीं डराती,
क्योंकि मैंने जीना सीख लिया है।

बेटी के जन्म पर लोगों के सूखे चेहरे,
औरों के घरों के सोहर गीत,
लोगों के ताने,
मुझे अब पीछे नहीं धकेलते,
क्योंकि मैंने जीना सीख लिया है।

मेरी नन्हीं परी की किलकारियाँ,
उसकी आँखों के सपने,
उसके डगमगाते पर सधे कदम,
मुझे ले जाते हैं बादलों के पार,
क्योंकि मैंने जीना सीख लिया है।

रंजना त्रिपाठी
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय,
कमान अस्पताल, अलीपुर, कोलकाता

71
धिक्कार तुझे आतंकी

रे मानवता के हत्यारे!
धिक्कार तुझे आतंकी

ग़र तू हिम्मतवाला है तो
शेर सा दहाड़
गीदड़ के मानिंद तू क्यों
करता है वार?
रे बुजदिली के मारे!
धिक्कार तुझे आतंकी

कठपुतली बोलूँ तुझको या
कहूं तुझे रोबोट?
तू गुलाम इशारों का, तेरा
आका रखे रिमोट
रे परबस बेचारे!
धिक्कार तुझे आतंकी

श्राप मिल रहा तुझे प्रत्येक
श्वास–प्रच्छवास से
लानतें मिल रहीं दुनिया के
हर आम–ओ–ख़ास से
रे टूटे हुए तारे!
धिक्कार तुझे आतंकी

निर्ममता बर्बरता की सीमाएं
तूने पार कीं
निर्दोषों निष्पापों की हत्याएं
कई बार कीं
रे निर्लज्ज नाकारे!
धिक्कार तुझे आतंकी

झांक खुद के भीतर तेरा क़द
कितना छोटा है
बिन विवेक ईमान धर्म के तू
कितना खोटा है
रे पापी नाशुकरे!
धिक्कार तुझे आतंकी

डॉ. संतोष कुमार गुर्जर
प्राथमिक शिक्षक (संगीत)
केंद्रीय विद्यालय बैकुंठपुर
कोरिया (छत्तीसगढ़)

72

शिक्षक से-तुम हो तो ही तक्षशिला है

शिक्षक जन्म सौगात मिली है।
सत् कर्मों की खान खुली है।
संचित तप का द्वार खुला है।
सदियों से सम्मान मिला है।
ज्ञान किरण चहुँ दिक् पहुंचाए ऐसा एक वरदान मिला है।
अरस्तु से अरविंदो तक अपनी भी एक परम्परा है।
तुम हो तो ही तक्षशिला है।
गुरु हो गौरव प्राप्त करो तुम।
पंडित बन पांडित्य वरो तुम।
"तमसो मा ज्योतिर्गमय" के मूल मंत्र को शीश धरो तुम।
सरस्वती की सय मैं रह कर लक्ष्मी के न दास बनो तुम।
चंद चांदी के सिक्के हेतु बिक जाये उसूल क्या यही वफ़ा है?
तुम हो तो ही तक्षशिला है।
अमृतपान कराना है अब।
तेजप्रताप बढ़ाना है अब।
शान्तिपाठ की ध्वनियाँ गूंजे।
नवोत्थान की घड़ियाँ हैं अब।
श्रेय तुम्हारा प्रखर विश्व में,
सुकीर्ति स्तम्भ गढ़ाना है अब।
अंकुर फूटे नव पल्लव हों,
देश हमारा चिर वल्लभ हो।
तुमसे पाने देश खड़ा है,
तुम हो तो ही तक्षशिला है।

मल्लिका शेषाद्रि
प्रधानाध्यापिका
के.वि. एच.बी.एफ. आवड़ी, चेन्नई

73

छात्र-अभिलाषा

पंछियों को खुला आसमान भाता है,
नभ में अपने पंख फैलाना भाता है,
पंछियों की तरह ही छात्र भी होता है,
उन्हें कहाँ सीमित विचारों में बंधना आता है,
उनकी उन्मुक्त सोंच का आकाश अनंत होता है,
और वह अपनी कल्पना के पंख से,
उड़ान पाना चाहता है,
गुरु ज्ञान से ही उनका मार्ग प्रशस्त होता है,
किस मंजिल तक जाना है,
कहाँ ठहरना है, कहाँ नीड़ पाना है?
गुरु से सही दिशा प्राप्त कर,
अनंत आकाश में अस्तित्व पाना है,
यही अनंत अभिलाषा लेकर,
छात्र को गुरु के पास जाना है।

अमित दवे
स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय, भारतीय राजदूतावास,
काठमांडू , नेपाल

74
पेड़ के गिरने पर

जबसे गिर गया है
फरेंदहा आम
हमारी बगिया के
सभी पेड़ उदास हैं
पत्तियाँ मुँह लटकाए हैं सवेरे से
हवा भी ठप्प है
कोयल मौन है
मोर ने भी केका नहीं लगाया
आज पछिलहरे से
लगता है रात वाली आँधी में गिरा होगा
तभी सबके सब मौन साधे खड़े हैं
अपनी–अपनी टेढ़ी–मेढ़ी
टहनियों के हाथ बाँधे कतारबद्ध
जैसे शोक मना रहे हैं
सबके सब
इस बाग में
मेरे बचपन में कुछ नहीं तो
सौ पेड़ रहे होंगे
धीरे–धीरे कम हो गए
कुछ कट गए

बाबा की तेरही में
कुछ अम्मा की बीमारी में
बाबा होते तो काटने कहाँ देते कोई पेड़
लिपट जाते उससे गोफा बाँधकर
जीवन भर
अकेले ही चिपको आंदोलन की अलख
जगाए रखी थी पूरे इलाके में
अपनी बगिया के हर पेड़ को
उसके नामों से पुकारते थे वे
जब फल देना बंद कर दिया था कुछ पेड़ों ने
पिता की राय थी बेच दिया जाए
बाबा इस पर आग बबूला हो गए थे
"हम को भी मार दो गोली
हम भी तो नहीं रहे किसी काम के"
किसी पेड़ के गिरने पर
बगिया की उदासी
अब कौन बाँचे बाबा के बिना?

डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा
पी.जी.टी. (हिन्दी)
के.वि. भावनगर पारा

75

झुको मूल की ओर

झुको मूल की ओर
इधर–उधर भटकें हैं पग
भटकी हुई निगाहें
तत्वहीन हुए मन–मानस
दिशाहीन हैं राहें
कटी पतंग हुआ है जीवन
गई हाथ से डोर।

बहुत पढ़ लिये पोथा–पोथी
ढाई आखर छूटे
बालपोथियों से बचपन की
हँसी–खुशी क्यों रूठे
निजता का खिलवाड़ रुपहला
बढ़े नहीं घनघोर।

कथा–कहानी, नानी–दादी को
फिर से अपनाओ
स्वर्ण–अक्षरों से अतीत के
नव इतिहास बनाओ

यदि नवीन हो रूपहीन तो
चले न उसका ज़ोर।

नई हवा में बढ़ता जाता
दिन–दिन बहुत प्रदूषण
नई सड़क बदरंग बहुत है
भाग–दौड़ का दूषण
मात्र प्रयोजन वैभव–भौतिक
दिखता ओर न छोर।

भरो उड़ानें, रोक नहीं
पर भूलो मत आधार
पानी, हवा, आग, नभ सारे
धरा बिना बेकार
ढर्रे ऐसे नए सुधारो
बहुत न जिसमें शोर।

संतलाल करुण
प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, बस्ती

76
दो बात उस खास से

मेरे बच्चे, मेरी जान,
न हो निराश, न खो विश्वास,
तू भी है विशेष,
तू भी है खास।
बेशक,
कुछ फूल देर से खिलते हैं,
मगर खिलते जरूर हैं,
और जब खिलते हैं,
३३ तो खिला देते हैं
सारे जग के गुलशन को।
बस, तू ऐसा ही फूल है।

मगर, याद रख,
तुझमें कुव्वत है खिलने की,
बस, इस काबिलियत को
संजो कर रख,
तू खिलेगा एक दिन,
बेशक खिलेगा।
और फिर–
चिंता किस बात की?
मैं हूं न तेरे साथ!
हम सब तेरे लिए ही तो हैं,
चाहो तो,पूछ कर देखना–
मम्मा से, पापा से,
दादा, दादी से भी।
हां, कोशिश मत छोड़ना,
क्योंकि
कोशिश करने वालों की,
हार नहीं होती।
तुम करते रहोगे न कोशिश –
आसमान छूने की?
और देखना एक दिन,
तुम झुका दोगे आसमान।

घनश्याम बादल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
(अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय
क्रमांक 2, रुड़की

77

पहाड़

चित्रों में चलचित्रों में
कितने सुन्दर लगे पहाड़
कल–कल करती नदियाँ बहती
झरने छेड़ें मधुर झंकार।
मगर हकीकत में पहाड़ की
तस्वीर बहुत भयानक है
जान हथेली रखनी होगी
तो ये जीने लायक है।
कभी दरकते कभी खिसकते
भूखे नंगे हुए पहाड़
बिजली पानी रोजी रोटी
सबसे वंचित हुए पहाड़।
दुर्घटना से मातम पसरा
खबर सुना रहे पहाड़
उचित इलाज के अभाव में
जीवन निगल रहे पहाड़।

मुकुल नौटियाल
स्नातकोत्तर शिक्षक (रसायन विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून

78
कलाम को सलाम

भारत की पावन भूमि पर ईश्वर ने अहसान किया है,
धन्य हुई वह गोद मात की जिसमें आपने जन्म लिया है।
जीवन में संघर्ष किया है, बाधाओं को रोज पिया है,
फिर भी तूफानों से लड़कर सारे जग में नाम किया है।

उड़ा मिशाइल नील गगन में, अग्नि उसको नाम दिया है,
भारत भी एक विश्व–शक्ति है.. दुनिया को यह बता दिया है।
ज्ञान दिया, विज्ञान दिया और भारत को सम्मान दिया है।
राष्ट्रपति से शिक्षक बनकर, शिक्षा का सम्मान किया है।

स्वप्न देखना हमें सिखाया, ड्रीम–ड्रीम कह हमें जगाया,
लिखी पुस्तकें अच्छी–अच्छी, साहित्य का रसपान किया है।
महामहिम रहे भारत के... देवों जैसा काम किया है।

आप धार्मिक, आप मार्मिक, आप किताबी, आप वैज्ञानिक।
आप हैं ज्ञानी, आप नमाज़ी, आप हैं साधु, आप समाजी।
मिटा अँधेरा अज्ञानों का, दीप ज्ञान का जला दिया है।
आगे–आगे चलकर हमको प्रगति का सन्देश दिया है।

भारत माँ के गौरव हो... नाम अब्दुल कलाम है।
आपके पावन चरणों में सौ–सौ बार सलाम है।

उमाशंकर पंवार
पी.जी.टी.–हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, चमेरा–1

79
विद्यार्थी जीवन

तन सुन्दर मन पावन होता, विद्यालय के उपवन में ।
जीवन का अनमोल धन, मिलता विद्यार्थी जीवन में ।।
समय सुन्दर व मूल्यवान, होता शिक्षार्थी जीवन का
अवसर मिलता रहता प्रतिपल, त्रुटियों से ज्ञानार्जन का
प्रातः तन–मन निर्मल होता, सुर–स्वर देवी वंदन में ।
जीवन का अनमोल धन, मिलता विद्यार्थी जीवन में ।।
होते जन्म प्रारम्भ हो जाता, शून्य शिशु का शिक्षा काल
प्रथम शिक्षिका माता होती, देती नव साँचे में ढाल
हँसना–रोना और पीना–खाना, माँ सिखलाती बचपन में ।
जीवन का अनमोल धन, मिलता विद्यार्थी जीवन में ।।
छिपा रहता है विस्तृत जीवन, एक छोटे से बस्ते में
मार्ग दिखाते रहते शिक्षक, कक्षाओं से रस्ते में
माली से शिक्षक बालपुष्प, महकाते विद्या–आँगन में ।
जीवन का अनमोल धन, मिलता विद्यार्थी जीवन में ।।
विद्यार्थी जो छात्रजीवन में, एकाग्रचित्त हो पढ़ता है
सफलता कदम है छूती उसके, जीवन में आगे बढ़ता है
करके धन्य माँ–बापू को, होता सुशोभित कुलभूषन में ।
जीवन का अनमोल धन, मिलता विद्यार्थी जीवन में ।।

सुरेश्वर मध्देशिया
स्नातक शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल,
अवंतिपुर, जम्मू–कश्मीर

80
के.वि. तेहरान शिक्षा का दर्पण

जब,

पहुंचा उड़कर तेहरान,
देखा तो हो गया हैरान।
कितना सुंदर है, यह ईरान।
सरल, सहज, यहाँ के इंसान।
जिसके बसता दिल में हिंदुस्तान।
सचमुच स्वर्ग सा, है ईरान।।

सभ्यता, संस्कृति और मेहमान।
मेहनत, ईमानदारी हमारी पहचान।
सबको देते मन से वो सम्मान।
ईश्वर, अल्लाह का हम पे वरदान।
कलाकृति है इनकी प्रकृति।
सौंदर्य सहजता में इनकी स्वीकृति।।

हिन्दुस्तानी संग सदियों से रहते।
गुरूवाणी भी बड़े भाव से सुनते।
विज्ञान विकास, आधुनिक संसार।
मित्रता, मानवता का हम भंडार।।

देश प्रेम उनका है महान।
क्षण में न्यौछावर कर दे अपनी जान।
नवरंग नवरात्रि धूमधाम से मनाते।
घर–घर मिठाई और पकवान पकाते।
सचमुच भारत सा प्यारा है ईरान।
आप दोनों की है मधुर मित्रता महान।।

शिक्षा सरगम के.वि. ने भी गुनगुनाया।
विश्व–शिक्षा को एक माला में पिरोया।

सच मानो,

के.वि. तेहरान है शिक्षा का दर्पण।
सर्वोत्तम, सर्वांगीण शिक्षा में विश्व को समर्पण।

बृजेश कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (जीव विज्ञान)
के.वि. तेहरान
भारतीय दूतावास स्कूल

81
प्रेरणा के शब्द

उत्साह छोड़ कर जब मानव,
पथ से भी भ्रमित हो जाता है।
मन विचलित होता है उसका
कुछ समझ नहीं वो पाता है।

जीवन से हारकर सबसे वह,
मुख मोड़ अलग हो जाता है।
दो शब्द प्रेरणा के तेरे,
उत्साह उसे दे जाता है।

प्रेरक शब्दों से प्रेरित कर,
तू प्रेरणा स्त्रोत बन है मानव।
नव दिशा दिखा कर तू जग को,
कर्तव्य निभा अपना मानव।

प्रेरक शब्दों में शक्ति वो,
जो जागृत करता है मन को,
नव ऊर्जा भर कर हृदय में वो,
झंकृत कर देता तन मन को।

नव चेतना पाकर मानव फिर,
उत्साह नई ले आता है,
सक्षम पाता है स्वय को फिर,
नव जोश से कदम बढाता है।

लिली सिंह
प्राथमिक शिक्षिका,
केंद्रीय विद्यालय, पश्चिम विहार

82

एक कदम बढ़ा मानव अस्तित्व के नाम

समाज मे फैल रहा, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, दुराचार।
चल उठ, ईश्वर के बंदे, कर इनका निराकरण, उपचार।।

माना की बुरी प्रवृत्तियाँ का है बोलबाला, बड़ा आकार।
मत हो भयभीत, बढ़ा कदम, परमात्मा की है पुकार।।

निडर होकर लड़ने को अराजकता,
अंधकार, अंधविश्वास से हो जाओ तैयार।
माचिस की एक तीली, काफी है,
भस्म करने को कूड़े का अम्बार।।

अगर डरे रुके करने लगे इंतज़ार।
मच जाएगा मानवता मे हाहाकार।।

भर साहस, विश्वास, देख
रामायण महाभारत कर्बला और यीशु का इतिहास।
मिलेगा विजय धर्म–सत्य को,
हारेगी–भागेगी, बुरी प्रवृत्तियाँ होकर हताश।।

डॉ. दिवाकर सिंह
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय सिख लाइंस मेरठ

83
ज़िन्दगी

मेरे आँसू का कतरा भी आसमान छूने का हौसला रखता है,
गर मैं मुस्कुरा दिया तो उसको पीछे छोड़ देता है।
न मुझ पे कर यकीन न उस पे कर यकीन,
तू खुद पे कर यकीन या खुदा पे कर यकीन।
अब न वो आशियाँ है न कोई मंजिले हैं,
अब तो बस मैं हूँ, रास्ता है रहजन है,
ऐ हवा तू कितने जख्मों को लिए चलता है
वक्त की तीमारदारी तुझ से पूछता हूँ
मैं वो नहीं जिसे हवा छू कर गुजर जाय,
मैं खुश हूँ क्योकि मुझसे वक्त की मोहब्बत है।
तुम न सहलाते तो टूट गए होते,
तुम न संभालते तो बिखर गए होते।
क्यों ढूँढते हो सहारा ऐ बदनसीब,
सबसे निजात मिल जायेगी खुद में रहना सीख लो।

भारतेन्दु पाण्डेय
प्रधानाध्यापक
केंद्रीय विद्यालय दानापुर कैंट, पटना

84
प्रकृति क्या कहती है?

मैं हूँ ईश्वर की सुंदर रचना,
मैं दे सकती हूँ मानव तुम्हें सर्वस्व अपना।
मैं हूँ शांत सरल सहृदय सहिष्णु,
लहलहाती, मुस्कुराती प्राकृतिक सम्पदा।।

सदियों से हूँ और सदियों तक रहूँगी,
मुझ में अपार भण्डार है ,तुम्हारे जीने के लिए,
जिनका संरक्षण तुम्हे करना है भविष्य के लिए।
किन्तु मुझ पर अगर यूँ करोगे अत्याचार,
मेरी जड़ों को काटकर महल करोगे तैयार,
मेरी हवाओं पर करोगे प्रदूषण का प्रहार।
मेरी ज़मीन और पानी पर लगाओगे प्लास्टिक के भण्डार,
तब यह न समझ लेना कि मैं हूँ मूक और लाचार।।

मेरी शक्ति का तनिक भी एहसास है गर,
तो समझ जाओ कि मैं रोक सकती हूँ
तुम्हारी हर सहर।
मेरी नदियाँ तूफ़ानी है,
तो मेरी हवाएँ शैतानी हैं
मेरी ज़मीन की कम्पन का,
यदि तुम्हें है अंदाजं
देखो लातूर–भूकम्प तो है इक छोटी सी फुंकार।।

असमान को छूने की इच्छा रखनेवाले हे इन्सान !
यदि प्रकृति से बैर करोगे,
तो जमीन पर भी न टिक पाओगे।
लेकिन मुझसे दोस्ती का हाथ बढाओगे ,
तो इस हरियाली धरती का सुख पाओगे ष्

गर स्वार्थ और कुटिल बुद्धि से ऊपर उठकर सोच पाओगे,
"खुद जियो और जीने दो" का मंत्र अपनाओगे,
तो लम्बी उम्र तक हरी–भरी,
वसुंधरा का सुनहरा रूप देख पाओगे।।

जी. वसुन्धरी
पी जी टी (जीव विज्ञान)
के.वि.नं 1 गोलकोंडा

85
एक गुरु के अहसास

आसमां से भी ऊँची उड़ान भर लो तुम,
ज़िन्दगी की बुलंदियों को हासिल कर लो तुम।

आप हो दिल के बेहद नज़दीक हमारे,
न रूठना हमसे कभी तुम्ही हो हमें अति प्यारे।

कभी गुस्सा किया तो न मानना बुरा तुम हमसे,
है अधिकार हमें क्योंकि है प्यार भी तुमसे।

माता–पिता और गुरुजनों को ही है डाँटने का अधिकार,
आखिर हम दोनों को ही हैं आपसे उम्मीदें अपार।

मन चाहता है कभी हम भी खेलें साथी बनकर आपके साथ,
कर लें हम भी अपने स्कूल के बीते लम्हों को याद।

बिन आपके स्कूल न लगे हमें प्यारा,
आपसे ही अस्तित्व स्कूल का, आपसे ही लगे न्यारा।

जब पा लो अपनी मंजिल तो भूल न जाना हमें,
राहों में कभी मिलो तो एक बार मुस्कुरा ज़रूर देना देखकर हमें।

हर लम्हा हर पल बस यही दुआ है ईश्वर से,
आप छू लो आसमां और कर लो दुनिया अपनी मुट्ठी में।

आसमां से भी ऊँची उड़ान भर लो तुम,
ज़िन्दगी की बुलंदियों को हासिल कर लो तुम।

जागृति गुप्ता
टी.जी.टी. (संस्कृत),
के. वी. मोहनबाड़ी

86
चुनौती

तैरकर नहीं उड़कर जाना है पार
ऐ समंदर तेरे।।
ना थपेड़े होंगे फिर ना हिलोरे तेरे।

पंख नहीं पर एक दिन उड़ ही जाऊंगा।।
पर ऐ समंदर मैं तर ही जाऊंगा।

घमंड नहीं, न है विश्वास अंधा।।
झपकेंगी अँखियाँ समय की और
मैं बदल जाऊंगा।

तैरकर नहीं उड़कर जाना है पर मुझे,
इस तेज़–तीर ज़माने को करना है लाचार मुझे।

परवाह नहीं, न सोच उनकी
जो टोके रोके हर पल मुझे।।
बस अब नहीं तो तब।
एक दिन मैं कर ही जाऊँगा।

तैरकर नहीं उड़कर जाना है पार
ऐ समंदर तेरे, मैं तर ही जाऊँगा।

अमित कुमार
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय न.1 कुंजबन
अगरतला

87
मत टकराना अंगारों से

मत टकराना
अंगारों से
फौलादी औजारों से
नहीं डरेंगे–नहीं डरेंगे
गोली की बौछारों से।

एल ओ सी पर जमे रहेंगे
माइनस में भी पड़े रहेंगे
फेंक–फाक बर्फीली चादर
सीमा पर ही खड़े रहेंगे
लड़ जाएंगे सीना ताने
आई नई बहारों से
नहीं डरेंगे–नहीं डरेंगे
गोली की बौछारों से।

जेट उड़ेंगे और सुखोई
रावलपिंडी के ऊपर से
फहरा देंगे हम तिरंगा
कर देंगे हम तुमको नंगा
लंबी फौज कतारों से
नहीं डरेंगे–नहीं डरेंगे
गोली की बौछारों से।

गौरी की तू बात करना
तुम्हे पड़ेगा हमसे डरना
अग्नि नाग की करले गणना
ढ़ह जाएगा इसके आगे
बढ़ी हुई रफ्तारों से
नहीं डरेंगे–नहीं डरेंगे
गोली की बौछारों से।

कारगिल की हम याद दिला दें
बढ़े चले हम आगे–आगे
जहां देख आतंकी खाई
जाकर उस पर बम गिरा दें
सांस नहीं तुम ले पाओगे
नए मेरे हथियारों से
नहीं डरेंगे–नहीं डरेंगे
गोली की बौछारों से।

हंसनाथ यादव
प्र0 स्ना0 शि0(हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय,सीधी

88
जीवन बनता जाता भार

चंदा की शीतल छाया
गंगा की सुंदर काया
लहराता सागर अपरम्पार
स्वप्न नहीं होते साकार
जीवन बनता जाता भार।।

स्मृतियों के बादल
मस्तक में उनकी छाया
नयनों में ढलता काजल
दिन दिन ढलती काया
जीवन बनता जाता भार।।

पर्व का ये रूप अपार
सजल नयन से चलती धार
नील गगन नभ का विस्तार
उड़ते बदल भीमाकार
जीवन बनता जाता भार।।

अपलक अनंत के तारे
भरते नित सागर खारे
तिरते बादल ये कजरारे
खड़ा देखता जीवन हारे
जीवन बनता जाता भार।।

वर्षा की मृदु मधुर फुहार
धरा गगन का मधु व्यापार
कंठों का वह कल्पित हार
बजाता उर के सोये तार
जीवन बनता जाता भार।।

प्रकृति नटी का खुलता द्वार
हिम भृंगो पर अमित तुषार
पथ में छाया अंधकार
नारद मोह हुआ साकार
जीवन बनता जाता भार।।

उषा कांत उपाध्याय
प्र.स्ना.शि.(हिन्दी)
के.वि. , हरिद्वार

89
विदाई के पल

विदाई के पल
करते हैं विकल
विदाई के पल...

यूँ चले जाते हैं
अपने अपनों को छोड़कर
जैसे बहता हुआ
झरने का जल
विदाई के पल...

रोक नहीं पाती हैं
नियति नटी
वक्त बंजारा
ठिकाना देता हैं बदल
विदाई के पल...

वो चाहे तो भेज दे
वो चाहे तो रोक दे
बिना उसके हिले न पात
उसकी मर्जी है सबल
विदाई के पल...

हम हैं कठपुतली
उसके ही हाथ के
वही सॉसो का नियंता
ये सत्य हैं अटल
विदाई के पल....
करते हैं विकल

बृजेश कुमार पाल
टी.जी.टी.(हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय बैंक नोट प्रेस देवास

90

श्रद्धांजलि : अब्दुल कलाम

आप सा अब कौन आएगा?
देश को जन्नत के सपने दिखलाएगा?
राम के मंदिर से दूर,
दूर मस्जिद की अज़ान से,
धर्म के अलगाव से अलग,
कर्म के ऊँचे मचान से
कौन मानवता का पाठ अब पढ़ाएगा ?

आप सा अब कौन आएगा?

पोखरण का वो धमाका,
आज भी भूला नहीं,
और न ही भूलती है,
बच्चों सी सहज तुम्हारी हंसी,

जितने कोमल तुम हृदय से,
स्वप्नदृष्टा उतने ही कठिन थे,
सहज ही तकनीक को,
जनहित में सोचते थे।।

दिखावा तो था नहीं,
पर दुनिया को दिखला दिया,
स्वप्न देखो , पूरा करो,
सहज ही सिखला दिया।।

कैसे दें? श्रद्धांजलि, अश्रुपूरित नैन हैं
आप सा अब कौन होगा, प्रश्न से बेचैन हैं।
तुम्हारे सपनों के भारत की, नींव हमने देखी है,
कुछ ईंटें कर्तव्यों की, उस नीव पर,
हाँ यही सच्ची श्रद्धांजलि है।।

रविता पाठक
स्नातकोत्तर शिक्षक
के.वि. नं. 1, रीवा

91
संभावना

पीढ़ी दर पीढ़ी
बदला बहुत कुछ,
पर बदला नहीं,
बचपन की कहानियों का चस्का।
कल, आज और कल अनवरत...

जब हम श्रोता थे, सिर्फ़ हुंकारे भरना होता था,
सुनी सुनाई कहानियों को,
फिर–फिर सुनते उनींदी आँखों को खोल–खोल कर।

वक्त बदला,
हम बदले, बने वक्ता,
सुनी हुई कहानियों में नया तड़का लगा–लगा
रिझाते रहे अपने नए श्रोताओं को,

आज भी सुनाती हूँ उसी लगन से वही कहानियाँ,
कहानी वाली मेम बनकर,
पाँच से आठ बरस के श्रोताओं को,
नन्हें हाथों की तालियाँ, आँखों में संतुष्टि की चमक,
आनंद ही आनंद ।

आशा की एक किरण है यह कहानियाँ,
जरिया है –
सामाजिक–सांस्कृतिक प्रदूषण से पार पाने का,
मानवीय मूल्यों के बीज ऊर्वर मस्तिष्कों में बोने का,
संभावना है –
भविष्य कुछ अच्छे मानव पायेगा 3...
इसी आशा में
जरूर सुनाती हूँ मैं, उन्हें कहानियाँ ।

अदिता सक्सेना
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय 1–एसटीसी, जबलपुर

92

नमन

देश के ख़ातिर जिए–मरे, जो त्याग सभी अरमानों को
जिन्होंने बाँध कफ़न सर पे, विजित किया हैवानों को
जो हिन्द के माथे से मिटा गए, गुलामी के निशानों को
नमन मेरा उन आज़ादी के, लिए लड़े दीवानों को।

जिसके देशप्रेम के आड़े, पुत्र–प्रेम न आया
जिसने बुढ़ापे की लाठी को, रण का पाठ पढ़ाया
गर शहीद हुआ बेटा फिर भी, जिसने ना अश्रु बहाया
नमन मेरा हर पिता को जिसने, बेटे को फौजी बनाया।

नाज़ों से जिन्हें पाल–पोसकर, पेट काटकर बड़ा किया
पकड़ के उंगली नन्हें–नन्हें, कदम बढ़ाकर खड़ा किया
उन्हीं कलेजे के टुकड़ों को, सपने भरकर विदा किया
मांओं को नमन जिन्होंने बेटा, भारत मां को सौंप दिया।

स्वयं के जीवन से भी प्यारा, जिनको देश का मान है
बंदूकों की आवाजें ही, जिनके लिए सहगान है
कर्मभूमि है जिनकी सियाचिन, जिनकी रेगिस्तान है
नमन मेरा उन वीरों को, जिनसे हिंद की शान है।

खुदीराम सा बालक भी, जहाँ मरने से न डरा है
जिसके सपूतों के सीने का, जोश कभी न मरा है
वन्देमातरम गान ही, जीवन का जिनके ककहरा है
नमन मेरा इस धरा को जिसके, कण–कण में ही शौर्य भरा है।

विपिन कुमार मौर्य
प्र. स्ना. शि. (कार्य अनुभव)
केंद्रीय विद्यालय क्र 2, शाहजहाँपुर

93
मेरी पहचान

मैं वो चट्टान हूँ, जिसपर तूफ़ान की तेज़ हवाओ ने की है नक्काशी,
कोई मोम नहीं, जो एक आंच से पिघल कर बदल जाऊँ।
मैं वो कोयला हूँ, जिसे वक्त के इम्तिहानों ने है तराशा,
कोई कांच का टुकड़ा नहीं, जो एक वार में बिखर जाऊँ।
मैं वो झरना हूँ, जिसने पत्थरों को चीर कर बहना है सीखा,
कोई उड़ता हुआ बादल नहीं, जो हवाओं से पलट जाऊँ ।
मैं वो वृक्ष हूँ, जिसे अपनों के त्याग और संस्कारों ने है सींचा,
धूप लगे छाया दूंगा , फल आए तो झुक जाऊँगा।

माहेजबीन मलेक
टी.जी.टी. (गणित)
के वि वायुसेना स्थल मकरपुरा वड़ोदरा

94
देखती हूँ

सुबह–सुबह
शहर के पथ पर
स्कूटर बस टेम्पू में
सवार बच्चे
बस्तों का बोझ लिए
कंधें पर लटकाते
पैदल चलते बच्चे
साइकिल चलाते
प्यारे बच्चे,
मन के सच्चे
इरादों के पक्के
मेहनत की राह में
मंजिल की चाह में
गंभीर हो!
सड़क के किनारे
खड़ी हो
देखती हूँ! पर कभी
अनसुलझी कुछ बातें
विश्वास न होती तब
मेरी आँखों को
शरारत करते, कुछ बच्चे
माँ–बाप के सपने
शहर के अपने
यह कैसा भटकाव है।
अविरल–धारा–सी बहाव है
न पतवार है
न नाव है
पर सच तो! मुझे,
इन्हीं बच्चों से लगाव है
आज से नहीं
कई वर्षों से
जब मैं पढ़ती थी
कविता में गढ़ती थी
अतीत के आइने को
आज भी देखती हूँ
सब कुछ
वैसा ही तो है
जैसा मैं सोचती थी

बच्चों के जीवन
सुधारने की बात
अपनी कर्तव्य निष्ठा
अपना योगदान
अपने वसूल
जिसे चाहकर भी
नहीं सकती हूँ भूल
इन्ही अँधेरों में, आज भी
एक पटाखा छोड़ आती हूँ
पंक के दल–दल से
एक कमलीनी तोड़ लाती हूँ
सजाती हूँ
अपने विद्यालय को !
आपको भी सजाना है
ऐसे ही पाठ पढाना है।

अंजनी आशा सलकर
प्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय
सीटीपीएस, चन्द्रपुरा

95
नादान उड़ान

दूर पेड़ की खोखल में, बैठा हुआ है एक नादान
सब गये है दाना लेने, मेरे आगे खाली विवान
हुआ साहसी सहसा परिंदा, मन से उसने ठान लिया
आँखों में ले सुनहरा ख्वाव, आकाश को अपना मान लिया
खोखर किनारे लगा सोचने, उड़ने की हिम्मत आई है
गिरते हुए संभला है जो, उसने ही तो मंजिल पायी है
कोई नही घर पर आज, मैं भी उडकर देखूंगा
हंसने वाला कोई नहीं है, मैं भी गिरकर देखूंगा
गिराया खुद को उपर से, एकाएक भय मन के घूल गये
संभाल लिया उर आकाश में, पंख एकदम खुल गये
इस परवाज़ से उसने, सूने अम्बर को जीत लिया
देर से ही डरकर ही, उसने भी उड़ना सीख लिया

कृष्ण कौशिक
प्र. स्ना. अध्यापक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय बेंगडूबी

96
वृक्ष की पुकार

मैं हूँ वृक्ष
तुम्हारा देवता
तुमने मेरी पूजा की
मुझे देवत्व प्रदान किया
मुझमें आत्मा का संचार किया
मुझे निर्जीवता से सजीवता प्रदान की
मैंने तुम्हे फल फूल और भाुद्ध हवा दी
तुम्हे बाढ़, वर्शा, तूफानों, तपती धूप से बचाया
पर यह क्या?
इस उपयोगितावादी संस्कृति में
अपने विलासिता और चन्द स्वार्थों की पूर्ति के लिए
भूल बैठे मेरा अस्तित्व
भूला दिया मेरा देवत्व, मेरी भाक्ति, मेरा अपनापन
जो तुम्हारे लिए था
मेरा अस्तित्व अब खतरे में है
क्या तुम मुझे नहीं बचाओगे?
या क्रूरता और निर्ममता पूर्वक
बना दोगे इस भूमि को बंजर
एक दिन खो दोगे अपना सबकुछ
स्वयमेव!

डॉ दीपिका सिंह
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय नं0 1
जिपमेर कैम्पस, पुडुचेरी

97
कल तुम चले जाओगे

कल तुम चले जाओगे,
अब क्या बहाना करके वापस आओगे।
बुलाना चाहूं भी तो कैसे बुलाऊं
दूर इतने हो आवाज कैसे लगाऊं
सिसकिया लेती है दीवारें भी.
दिन काहूं भी तो कैसे कटें,
तेरा नाम जुबां से कैसे हटे
भूल गया था दुनियां का दस्तूर
पर इसमें मेरा क्या कसूर
मेरे दोस्त मेरे साथी, मेरे हमदम
तू इतना क्यों याद आता है?
तेरी आँखों में आंसू है।
और हंसने का बहाना बनाता है।
खुशी का हर पल अधूरा हो गया है।
अधूरी है जिन्दगी मेरा हर
गम पूरा हो गया है।
और क्या कहूँ मैंः बस इतना कहना चाहूँगा
कभी मुझे भी याद कर लेना चन्द लम्हे बरबाद कर लेना
दो आंसू आँखों में भर लेना
ऐ दोस्त कभी मुझे भी याद कर लेना

आशुतोष मिश्रा
टी.जी.टी. (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय रक्षा संस्थान
खड़गवासला, पुणे

98
भर दो नवजीवन की आस

विश्वास जगा दो हारे मन में
भर दो नवजीवन की आस
टूट गई आशाएं जिनकी
डोल गया जिनका विश्वास
हो निराश जो भटक रहे हैं
बांटो उनमें नव उल्लास
पथ भूले अपनी मंजिल का
ढूंढ़ रहे थक शीतल छांव
सही दिशा दो, नया जोश दो
भर दो उनमें आत्मविश्वास
जग ने जिन्हें सताया अतिशय
कुंठित किया दिया अपमान
उनके सूखे अधर नम कर दो,
दे दो उन्हें मधु हास
खिलने से पहले कुम्भलाई
दफन हुये जिनके अरमान
ऐसे उफान दो उन कवियों को,
भर दो उसमें जो मधुमास
मानव हो तुम मानवता के नाते
मानवता से प्यार करो
दीनों को तुम गले लगाओ
भर दो नव जीवन की आस।

मीना अग्रवाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय, रेंजहिल्स खड़की, पुणे

99
विनम्रता

फल से लदे तरू झुकते है,
झुककर फिर उठ जाते हैं
जितना जल नीचा जाता है,
उतना उठ ऊपर आता है
झुकने वाले राह है पाते,
निज पथ पर आगे बढ़ जाते
झुकना नहीं कष्टों के आगे,
अन्यायी, जुल्मी भ्रष्टों के आगे
झुको तुम सत्य के आगे,
अहिंसा, धर्म, सदाचार के आगे
मधुर फलों से तुम लद जाओ,
झुको स्वयं, औरों को न झुकाओ
खुद झुककर आगे बढ़ जाओ,
अपना जीवन सफल बनाओ।

के.एस. अंगारे
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिक
केन्द्रीय विद्यालय, रेंजहिल्स खड़की, पुणे

100

सूरत और सरित

हौंसले बुलंद हों जिसके
उसे कोई गिरा सकता नहीं
आईना सूरत तो दिखा सकता है
पर सीरत कभी नहीं

आशाओं का काजल जो
कोई आंखों में लगाता है
सफलताओं का नूर
चेहरे पर चमकाता है
उसी नूर की आड़ में
जो कमल खिला सकता नहीं
आईना सूरत तो दिखा सकता है
पर सीरत कभी नही

आत्मविश्वास जिसकी
रग रग में बहता है
सफलता के चरणामृत
को धीरे से कहता है
सफलता कुलाचे भरती

उसके कदमों पर गिरती है
जिसके पास विश्वास की
अदम्य शक्ति होती है
पर हर शख्स इस शक्ति
को पा सकता नहीं
आइना सूरत तो दिखा सकता है
पर सीरत कभी नहीं।

रमेश कुमार
स्नातकोत्तर अध्यापक गणित
केंद्रीय विद्यालय, बेंगडुबी

101

श्रमेव जयते

उम्मीद पर टिकी है दुनियां,
सपनों से सजाई जाती है
सपनों को सच बनाने में
मेहनत ही काम आती है

परिश्रम सफलता की कुंजी
परिश्रम भाग्य बनाता है
बिना परिश्रम किये तो
लिखा भाग्य मिट जाता है

सदियों से रहा है हमारा आदर्श
उसे ना भूल जाना तुम
बन जाओ चाहे जितने बड़े
परिश्रम से जी न चुराना तुम

आलस का भंवर त्याग कर
परिश्रम को तू अपना ले
करता चल नित कर्म तू
जीवन अपना सफल बना ले

कपिल कुमार
प्र.स्ना. अध्यापक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, पोर्टब्लेयर

102

मुल्क मेरा मुकम्मल हो जाएगा

धर्म का मर्म क्या, जब ये सिखलाओगे,
भाषा का कर्म क्या, जब ये बतलाओगे
भूख दौलत की मिटती कभी भी नहीं,
दौड़ सच–झूठ की जब भी लगवाओगे

मुल्क मेरा मुकम्मल हो जाएगा, ये तिरंगा गगन पर भी फहराएगा

जज्बा किसको कहते हैं, शहादत किसका नाम है,
जो मर–मिटे इस देश पर उनका क्या पैगाम है
जब बिना परों के उनको तुम आसमां दिखलाओगे

मुल्क मेरा मुकम्मल हो जाएगा, ये तिरंगा गगन पर भी फहराएगा

पानी की हर बूँद कीमती, और भोजन का दाना है,
जहाँ मचा हो क्रंदन हमको, अपना हाथ बढ़ाना है,
खोते हुए हर पल का मोल, जिस दिन उनको बतलाओगे

मुल्क मेरा मुकम्मल हो जाएगा, ये तिरंगा गगन पर भी फहराएगा

ज्ञान का मोल क्या, त्याग अनमोल क्यों,
है बली से बली, ये मीठे बोल क्यों
सीख ठोकर से क्या मिलती सिखलाओगे

मुल्क मेरा मुकम्मल हो जाएगा, ये तिरंगा गगन पर भी फहराएगा

संजय कुमार जैन
सहायक अनुभाग अधिकारी
के.वि. नई कटनी जंक्शन

103

'मैं' को 'हम' में बदल कर

घर से बाहर निकलकर
अपने 'मैं' को 'हम' में बदल कर
जन दृजन के मन में विचारों की ज्योति जलाकर
दबाव से नहीं, मन से गले लगाकर
लाभ–हानि की बातें बता कर
हम कर सकते हैं, यह कार्य महान
नुक्कड़, चौराहे पर
दिखाकर नाटक,
चिपकाकर पोस्टर, निकालकर जुलूस
चलाकर "स्वच्छता अभियान"
ला सकते हैं एक नया विहान
जब रच दृबस जाएगी हमारी सोच
तब निश्चित ही
शुद्ध स्वच्छ आँचल लिए
भारत माता मंद–मंद मुसकुराएगी।

नलिनी ओझा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय, 9 बी आर डी, पुणे

104

हे मानव! पेड़ की व्यथा

तड़फड़ाती छातियाँ आजन्म, उत्कट जिजीविषा–सा,
गिड़गिड़ाती नाड़ियाँ हर, रक्त कतरा रुआँसा–सा।
सरसराती ताजगी भरता मैं, चहुँ ओर स्व साँसा–सा,
राख हुआ, आलिंगन कर तू, धू–धू प्रेम पिपाषा–सा।
तू अमर प्रेम पिपाषा–सा।।
चिकचिकाती–आरियाँ तू, मैं अदम्य दगदगाता नव आशा–सा,
थरथराती–डालियाँ मैं,हीन भुज–सिर भरभराता निराशा–सा।
टुकड़े–टुकड़े आज गड़ा मैं, छटपटाता चौमासा–सा।
मैं छटपटाता चौमासा–सा द्यद्य
बड़बड़ाती–वाणियाँ चौराहों में, रोज़ तमाशा–सा,
धगधगाती– छातियाँ असंख्य, उगता उत्कट अभिलाषा–सा,
पर छलनी–छलनी आज खड़ा मैं, देख तेरी परिभाषा–सा।
देख तेरी परिभाषा–सा.... ।।

मनोहर साहू
पी. आर. टी.
केवि क्र.4 कोरबा (छ.ग.)

105

इंसान

कोई कहता हिंदू बड़ा
कोई कहे मुसलमान ।
इससे तंग मैंने आबादी से
अलग बनाया एक मकान।।
कोई न उलझे मुझसे
तो बाहर बिठाया दरबान।
कुछ सोचकर उसको
सुनाया यह फरमान।।
कोई हिंदू गर तुझसे
पूछे तो ऐ दरबान।
कहना के इधर है
रहता एक मुसलमान।।
पूछने वाला जो कभी
हो मुस्लिम कोई ।
कहना के एक हिंदु
का है यह मकान।।
भूले भटके कहीं से
आ जाए कभी इंसान।
कहना के चला आए
इधर है रहता एक इंसान।।

नामदेव
प्र.स्ना.शि. (हिंदी)
के.वि. घुमारवीं

106

संध्या

दिवाकर जिसे नमन कर चुका था जाते जाते
आसमां के पीलेपन पर नाज़ था जिसे
संध्या बाँह गही थी प्रियतम की।
दिवस के ढल जाने का गम
महसूस कर रहे थे राही
मंजिल की तलाश में ।
काँव–काँव की कर्कश ध्वनि
ऊँचे टीले स्थानों से पुकार रही थी
जातिवालों को, अपनों को ।
बेचारा एक अकेला पंछी
खो गया था दुनियाँ की भीड़ में
उसका अपना आज कोई न रहा
करूण व्यथा को पेड़ों से, पत्तों से
कह रहा था जा जा कर
सुन रहे थे क्रंदन उसका चुपचाप
सब अपने अपने ठिकानों से, आशियानों से
सुबह सबने दुख जताया, श्रद्धांजलि दी,
अपनी दिनचर्या में खो गए, लीन हो गए ।।

रामसुदर्शन राय
टी.जी.टी. (हिंदी)
के.वि. नई कटनी जंक्शन, कटनी

107

शिक्षक से

शिक्षक से पावन हुई ये धरती
शिक्षक से हमे संस्कार मिले
मिला है बच्चो को सच्चा मन
जाने कितने कलाकार बने
जाने कितने चित्रकार बने
जाने कितने डॉक्टर इंजिनियर हुए हैं
जाने कितने जज, वकील
आपसे कितने जीवन बने हैं
आपसे आज जीवन संभले हैं
जबसे शिक्षा दान दिए हो
शिक्षक बनकर धन्य किए हो
शिक्षक से मिला हमे सब कुछ
शिक्षक के रुप मे भगवान बसे हैं
आपको प्रणाम करती है ये दुनिया
बच्चे और पालक जन।
आपको करते हैं नतमस्तक
करके भात भात नमन

राकेश महातव
सब स्टाफ
केंन्द्रीय विद्यालय डब्लू सी.एल., चंद्रपुर

108

सोचो क्या कुछ कर पाते हो आप

उड़ते हुऐ गगन चुम्बी इन पंछियो को देखो,
धरती को सीने से लगाये दूब की इन घांसों को देखो।
क्या कुछ कर पाते हो आप द्यघने अंधेरे में तारों को देखो,
सुबह के नये किरण के साथ, शुरू होते इन फुहारों को देखो
फिर सोचो क्या पाते हो आप?
जंगल की सूखे, लकड़ियों को देखो,
फूलों के ऊपर मंडराते इन भौरों को देखो
फिर विचार करो क्या पाते हो आप
बिना चप्पल के धूप मे चटकती जमीन पर,
चलते नन्हे से बच्चे को देखो,
प्यास के कारण नल की टोटी चाठते हुए बंदर को देखो,
फिर आप सोचो क्या कर पाते हो आप
मन में चल रहे इस द्वन्द्व को रोक कर देखो
क्या रोक पाते हो आप; नही न? जी हाँ ।
बस यही ज़िंदगी है।
सोचो क्या कुछ पाते हो आप।।

डॉ विनय कुमार सिंह
कला अध्यापक
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक–3
ओ.एन.जी.सी. सूरत

109

क्या कहकर पुकारूँ उन्हें

कवि दार्शनिक या साहित्यकार, क्या कहकर पुकारूँ उन्हें,
देखकर जिनके विविध गुणों को, करती हूँ मैं नमन जिन्हें।
लेख़क शिक्षक और चित्रकार, उपलब्धियाँ जिसकी हैं अनेक,
मिटा कर भेद–भाव को जिसने, पूरब पश्चिम को किया था एक।
कवि दार्शनिक या साहित्यकार,
क्या कहकर पुकारूँ उन्हें,
जन्मा था जो कुलीन कुल में, पर रास नहीं आई विलासिता,
अपनाकर सादगी का चोला, त्याग दिया ऐश्वर्य को जिसने,
लाकर दिया नोबल प्राइज भारत को,
गौरवान्वित किया अपने देश को,
भारतीय संस्कृति की महक को, बिखेरा जिसने पूर्ण जगत में।
कवि दार्शनिक या साहित्यकार,
क्या कहकर पुकारूँ उन्हें,
राज दुलारा माता पिता का, बचपन का था नाम रवि,
रश्मियाँ बिखेरता अपनी प्रतिभा की, युवा हो कर वह बना कवि,
शिक्षा के हैं एक आदर्श, रविन्द्रनाथ हैं पूज्य हमारे,
शांति निकेतन बनाया जिन्होंने, गुरूदेव वो सर्वस्व हमारे।
कवि दार्शनिक या साहित्यकार,
क्या कहकर पुकारूँ उन्हें,
देखकर जिनके विविध गुणों को, करती हूँ मैं नमन जिन्हें,
करती हूँ मैं नमन जिन्हें।

रिंकी कुमारी
प्राथमिक शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय दानापुर कैंट

110

अब कोई नया मनुष्य जन्म ले

नस्ल और जाति का न भेद हो
गरीब मुक्त हो न कोई खेद हो
धर्म पथ का भी न कोई विभेद हो
मात्र मानवता का ही संदेश हो
बस सभी के मन में यही सोच हो
अब कोई नया मनुष्य जन्म ले।

ज्ञान हो विज्ञान हो,
नित नया विज्ञान हो,
नित नया विधान हो
सभी समस्याओं का निदान हो
न राष्ट्र हो न राष्ट्र का आकार हो
वैश्विक मानवता का सपना साकार हो
कोई ना मनुष्य जनम ले।

नित कई कला और संगीत हो
गाने को रोज नया गीत हो
सच्ची एक–दूजे से प्रीत हो
मानवता की ही बस जीत हो
रीत नई कुछ भी न विपरीत हो
अब कोई नया मनुष्य जन्म ले।

खोज ही अनुसंधान हो
आतंक का कहीं न नाम हो
दिग्–दिगांत शांति का ही धाम हो
न कोई निराश हो, न भूख हो, न प्यास हो
हर तरफ उल्लास ही उल्लास हो
ह्रास हो, परिहास हो, मानवता का विकास हो
अब कोई नया मनष्य जन्म ले।

डी.पी. थपलियाल
पी.जी.टी. (अर्थशास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय, ओ.एल. एफ, देहरादून

111

भाग्य

सुख और दुख के दरम्यान एक भाग्य ही तो है,
जो करता है निर्धारण कर्मों का फल,
जिसके फैसले सदा रहते है अटल,
दरअसल भाग्य पूर्व कर्मों का समग्र प्रारब्ध होता है,
इसी परिधि में हर एक को वैसा ही जीवन बिताना होता है।
किसी को मिलती है राजयोग भरी जिंदगी,
तो किसी को टूटी झोपड़ी में सिर छिपाना होता है,
परिस्थितियों के साये तले भाग्य ही प्रगट होता है,
जिंदगी के सफ़र में कोई तो हँसता है तो कोई रोता है।
शुभ–अशुभ कर्मों के मिश्रण से तैयार होता है भाग्य दुर्भाग्य,
अफ़सोस कि जातक इतनी सी बात से अनजान होता है।
जबकि बोध है उसे कि भाग्य नहीं कर्म वश में होता है।
फिर क्यों हर कोई अपने भाग्य को दोष देता है,
क्यों नहीं ले लेता फिर पुरुषार्थ का सहारा,
मिल जाये तुझे सुखनगर का किनारा।
मन बुद्धि और इन्द्रियों से भरपूर काया लेकर,
क्यों नहीं कर लेता तैयार भाग्य का पिटारा।
अरे दोषारोपण छोड़ यदि कर ले थोड़ा श्रम,
तो खुद कह उठेगा इस दिन कि सारा संसार है हमारा।
परिश्रम की कलम से अपनी भाग्य रेखा बना लो,
शुभ कर्मों की निरंतरता से परमात्मा की आरती उतार लो।

रतन कुमार
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, ए.एफ.एस. वागडोगरा

112

जुगनू की सीख

एक लड़की थी बड़ी सयानी,
नाम था उसका बेबी रानी.
जुगनू को चमकते देख,
उसे हुई कुछ यूँ हैरानी
बोली जुगनू भैया,
तुम ये टार्च कहाँ से लाए हो,
मुझको भी एक ला दो ना,
देखो करना ना आना कानी .
हंस कर जुगनू बोला प्यार से,
भोली हो तुम बेबी रानी,
ये तो कुदरत की देन है.
मै कहाँ से लाऊंगा!
पर तुम तो
पा सकती हो,
जग को उजियारा कर सकती हो
बेबी बोली कैसे...
मुझको भी बतला दो ना
अपने दम से उजियारा करना
मुझको भी सिखला दो ना...
जुगनू बोला
सच्चाई से मुंह मत मोड़ो,
खूब पढ़ो खूब लिखो,
दूसरो के काम जब आओगी,
मेरे जैसा ही क्या "वंदे"
तुम तो चाँद जैसी चमकोगी।

वंदना कुमारी
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय दानापुर कैंट

113

फ़ुर्सत से मैंने कभी

फ़ुर्सत से मैंने कभी ज़िन्दगी की तरफ़ नहीं देखा
ज़िन्दगी ने भी ग़ौर कर मेरी तरफ़ नहीं देखा।

चल दिये तो चल दिये, मक़ाम[1] मिले, न मिले
मुड़कर मैंने कभी पीछे की तरफ़ नहीं देखा।

मिला कोई बेदम, दम दिया अपना मैंने उसको
हकारती[2] नज़रों से कभी उसकी तरफ़ नहीं देखा।

महफ़िल भरी थी खचाखच, नज़रें सबकी रक्कासा[3] पर
पता ही न चला किसने किसकी तरफ़ नहीं देखा!

होंगे और जो करते होंगे शिकवा ख़ुदा से किस्मत का
आँख उठा मैंने कभी फलक[4] की तरफ़ नहीं देखा।

1. टिकान, पड़ाव
2. घृणा से पूर्ण
3. नर्तकी
4. आकाश, आसमान

डॉ शची कांत
संयुक्त आयुक्त (कार्मिक)
केविसं (मुख्यालय)

114

The Class Teacher

The class teacher rolled his fingers
Over his forehead, stressed and puckered,
As angry parents showered displeasures
Over a matter gravely uncared.

“He is a rogue, an insane creature”
Shouted the man with burning gaze.
His finger and voice, pointed and bitter
Called for the voices of others to engage.

The 'prey' was a child of six or seven
Naughty eyes blushed his smiling face.
With being poor as the gift of heaven
Dared the rich and ‘learned’ in the race.

Poverty mastered him stealing a pen
Slum was the teacher of his tongue.
The dusk he met in the dingy den
Left him pitiless, squeezed and wrung.

"We want him out of school" thundered
A voice from the mid of the mob.
Class teacher, shocked and wondered,
Kept him calm and true to his job.

"We withdraw our kids, if he remains.
Schools are there, better and near."
Hopelessness the mob did feign
Trying to display an unknown fear.

Calm, serene, the teacher did assert
With a voice both firm and strong.
"You may act as you please, but,
A teacher is needed to correct the wrong".

Bidyut Bikash Mahato
Principal
KV AFS Kasauli

115
Little Caspers

I stand at the threshold
Looking at you engrossed
In everlasting prattle;
And you notice me
An ominous silence prevails.

I spot, the jeer in your tones,
Your reluctance to turn the pages,
Stealing the looks of your pals,
Stealthily giggling at each other
Those in deciphered gestures;
Oh! That wide grin on each face
On my stern stare,
Indeed, a last straw.

Alas! An intelligent question darts at me,
And a startling smart reply pops up,
I stand perplexed and boggled.

When I look at you searchingly,
You simply sit like meditating Buddha,
But your chirpy eyes betray you.

I come out with a confession
Ah! These little caspers,
Epitome of innocent mischief,
Make my day.
And I disperse with a chuckle.

C. Madhuri
PGT (English)
KV Mahabubnagar

116

The Painter Divine

It's spring-time splendor,
That makes me wonder
All the divine beings
From Heav'ns palette to life.

The blossoms in all its grandeur,
Blazing forth their myriad hues.
Hasten forth to meet their comrade,
Born from His easel unclad.

The spring-time splash of green,
Speaks of His majesty's dream.
Of nurturing life in its bosom
Revelling in His plan of wisdom.

The gurgling streams, gushing incessant,
Merrily bubbles into life every instant.
The lofty mountains too rise to behold,
And stand in awe of the Painter divine.

The greatest of all His creations,
Children, of His finest expression.
Born to be emblazoned,
Were in His palm, engraved.

For it's the spring-time splendor,
That makes me wonder.
At how well chiseled, we after Him designed,
To suit a purpose well conceived.

Bina Mathew
PGT English
KV MG Railway Colony, Bangalore

117

My Students, My Inspiration

I whizzed the car one wintry morning
Feeling grey and misty
The way shadowy, white and foggy
Oh how I wished I could lie
With my thoughts tranquil and muggy

But lo and behold I heard
The laughter and the gaiety
My bubbly children gibber and bumble
The morning prayer upbeat and jubilant

I trudged my weary steps into the ever ebullient classroom
And then my spirits rose as high as stormy waves
Overwhelmed I immersed myself into teaching Stephen Spender

The joyous laughter of effervescent students
The invigorating tutelage of Principal
And the lightheartedness and hilarity of colleagues,
the admiration of students and appreciation of parents
Make the day a distinctive one
And then the heart yearns for more
And this my friends is what makes the days of a KV teacher
Emblematic pepped up and full of cheer.

Chhaya Kumar
PGT English
KV Andrews Ganj

118

I am a Woman

I am a WOMAN …….the best of GOD"s creation.
Whom do you call weak? Whom do you call frail ?
Nature has blessed me with beauty from within,
strength of mind and care
A heart so full of love, it can love the unlovable
A mind so strong, it can bear the deepest pain with a smile
A will so powerful,
it can work for an entire household with joy
Patience so elastic, it can be stretched for miles with ease
The cup of compassion so full and
overflowing it reaches out to hard hearts
Whom do you call weak? Whom do you call frail ?
Beneath this mask of gentleness is an indomitable will
A character so good and strong that its
fragrance spreads far and wide.
A personality so towering; whose meekness is no weakness
A flame burning so bright that it can burn away the dross
of selfishness and hatred with goodness
Through me generations progress and are blessed .
I am a WOMAN …….the best of GOD"s creation.

K.S. Soujanya Singh
PGT (English)
KV No: 2 Nausenabaugh

119

Love

'Love' is a word pregnant with meaning ;
Possessing Charismatic power to unite human beings.
Mankind's concept of love has become restrictive
Sagacious men can only understand it in the right perspective
Man, proudly claims that the world has shrunk in size ;
But he has not been judicious enough to realize,
That mankind instead of coming closer has drifted apart.
Hatred and not love reside in their heart.
Abominable crimes have become the order of the day ;
Naked barbarism holds everything within it's sway.
The abatement of crimes can only be possible,
When Men spread the message of love and become responsible.
This world will become a Heaven indeed ;
When Men practice love in thought, word and deed.

Jayasree Bhattacharyya
PGT English
KV New Cantt Allahabad

120

A Child within a Child

Hardly ten, innocent like a sheep and very meek.
How lovely the child is !
How beautiful the childhood is !
Hardly ten ! Alas ! Unaware of the intentions called 'Man'

How readily she believes in everybody
How Godly she feels chewing toffees and
chocolates given by 'Man'
But that day 'the chocolate' was too bitter for her to swallow.
She must have cried
She must have pained
Knowing not 'the game'
Of the lusty 'Man' she called 'uncle'.

But she is a child as ever she is
simple and unaware of the ways of the world,
little she knew what she carries within her.
'a child within a child'
Blessed by God
Abused by the 'man'
Hardly ten, unknown and unaware of the world
She is carrying within her.

Jitendra Singh
TGT English
KV Lansdowne

121

Prayer to a Teacher

In my sunny life
You are the light
And I, like a sunflower
Ready to effloresce
With your reputed ingenuity,
Brilliant imagination
Innovative activities
Eagerly await the endless pleasure of learning
Thus dear teacher, please listen to me.

True I am here in the temple of learning
With the boon of RTE
Yes, my parents are not that literate
Yes, my parents do not have social status
Yes, they do not speak in English, nor do I
What you believe as Higher Order of Thinking
Is not my domain, at present
But listen
I have a brain I can reason out
What's good and what's bad
Dear teacher, just listen to me
In pursuit of excellence
Slaughter me not at the altar of knowledge
'Cause given a chance I can learn

Just love and do the handholding
See not what I can't do
Judge not what I do not know
Adjudge what I can do the best
Fathom my ability
To narrate intriguing tale of common man's history,
Folklore, ecology, migration, love and grief
In natural way

Help me, dear teacher to become a good man
Not a great man.....a good man
Enable me, empower me
Help me to evolve to be a good man
Wisdom is embedded in my primitive gene
Make me a good man
And I will Change the world.

Preeti Roy
Principal
KV No. 3, Bhubneswar

122

Interview at the School

Like fresh dew settling on the plant nearby
Memories start trickling as the moment has finally arrived.
The rays of hopes and bustling life greet beneath the window
I look at the mirror to tell my old self, a final good bye.

As, I walk on the narrow alleys approaching the school
The scents of sweets sold by the gate make me drool
I am reminded of those days of friendship, joy and comfort
And how we used to jump over the wall like fool, albeit with great effort

As I open the gates, Heart starts pounding
The thought of concrete embracing the building, keeps visiting
Thankfully, the birds are chirping while the gardens are still enchanting
The innocence in its environment, escaping the trounces and realities is still comforting

I see kids run and having fun,
Withstanding the feeling of watching familiar face
I wait for my turn outside the principal's office
Nervously I look at the old clock, to check if I wasn't late for the interview, in any case

Suddenly, I see my English teacher walking close by
Memories of her lessons of courage, dignity and empathy are running high
With smile I greet,
She taps me like how long lost friends meet

We are disturbed by alarming sound of the bell,
The strange feeling of excitement, confidence and nervousness makes me dwell
The Principal asks me what brings me to the school after the initial chatter,
I reply, it's the Passion to give back is all the thing that matters.

J S V LAKSHMI
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS (HR)

123

Constructive Destruction

Every destruction
Is constructive.
A flower blooms
When a bud withers
A fruit emerges
when a flower fades.
The seeds scatter
When a fruit decays.
A new plant sprouts
When the seeds perish.
Law of Nature
Is inevitable.
Nothing accomplished
Without loss
The spring of pain
advent of pain killers
The engrossed efforts
arousal of awakening
The pain of search.
deposits of innovation
The efficacious experiments
creep of creativity
The pain of thinking.

birth of success
The pain of experience.
feel of endurance
The incessant efforts of youth
overwhelming old age.
No pain no gain
Pain empowers you.

G. MEENAKSHI
PRT
KV NLC NEYVELI

124
What their Lives will be

I often see parents looking at their children,
Wondering what their future and lives will be,
If they ponder and search for some answers,
Their future they might see.
Have they taught them to be truthful,
Have they taught them to be kind,
Have they inculcated right values,
Needed for the mankind?
Have they taught them to love and care,
For those who need it,
Have they told them why to share,
And that one should never quit?
Have they taken out time to tell,
How miraculous life is,
Have they told how a flower smells,
And have shown the beauty it gives?
Have they told them how important it is,
To have respect for others,
To be humble and grateful,
When good fortune they discover?
Do they let their child know,
That they love them the most,
Do they let their emotion flow,
And tell them what is hope?

Have they taught them how to say a prayer,
They like to think they have done their best,
Have they given enough time and care,
Can they answer all my questions in 'Yes'?
I will leave that up to them,
For then I know that they will see,
Hope they answer in affirmation,
A heart filled with happiness like it is supposed to be!

Payal Singh
PGT (Economics)
Kendriya Vidyalaya Basti

125

The Painter Perfect

How unique thy painting is!
How soft thine colours are!
How blissful the brush is!
How versatile the painter you are!

Grey thy colours look; when myself in distress find,
I could feel the sea of pain with waves raging high,
Yell of yellow leaves can only sorrows remind,
My longing emotions cry, when I look at stretching sky.

No longer could I take; delight in the dying Sun,
No longer could I feel; the thorny rays of upsun,
Monsoon resembled; my agonized eyes raining,
And breeze could only wind; my sighs burning.

But rapture relish through; with the moment of ecstasy,
Butterflies carry my heart; I sense the soul sailing.
Clouds message my emotions; as an act of curtsy
And blossom babies can touch; my senses up springing.

All day I could feel the feathers of the birds,
All day I could talk to the precious pearl drops.
Calm desert gave me warmth of love,
In the canvas of my heart you made me rise above.

How abstract the painting is!
How changing the moods are!
How baroque your art is!
How rare thy creatures are!

Yogesh Jethava
TGT English
Kendriya Vidyalaya Rajkot

126

Life

Earlier there were problems in life,
Today we search life in problems

Earlier we had time to work,
Today we try to get time from work

Earlier, distant friends and relatives meetings were constant,
Today all friends and relatives have become distant

Earlier people shared joys and sorrows with eager,
Today they share posts on whatsApp, facebook and twitter

Earlier youngsters respected elders always,
Today they need to wait for special days

Earlier birthdays and marriages made us proud,
Today they are solitary events with no crowd

Earlier journey of life was very easy,
Today contended life is rare, as all are busy

Life has become metro with full speed,
We fail to connect with the people we need

Still we lead life like duty in shift,
Because it is God's precious gift,

SUVARNA SANER
T.G.T. English
K V Dhule

127

The Race

From mastering the tricycle to managing the bicycle
growing out of Mom's lap & braving out a broken
knee cap
From picture books & number charts
To face book & shopping carts
We journeyed through complexities of life
Accepted as our due the bitterness of strife.
Travelling through the seas
& battling with the birds & bees
Gaping at the planes of geometry
And struggling with the figures of trignometry
Where has our childhood gone?
To failure in all likelihood
We have become prone
First second or third language
Its one and the same baggage
Of revolutions and reforms
Of whirlwinding typhoons & toe curling snowstorms
We battled our way through competitions
& vied for the chosen few positions
Yes, it has been an awesome odessey
More often out than in

Yet pursuing the elusive fantasy
Of giggling girls and grim glares
Soothing pats and fiery flares
Working in a group or standing alone
Either with them or without them
How has time flown?
Played a merry go round
Played a merry go round
With all the troubles we found
While we strove for sophistication
In the name of education.

N. Shesha Prasad
PGT English
KV. AFS Begumpet

128

Funny Creatures

Children say the funniest things,
They often surprise and confuse their teacher,
The craziest thing about children
Sometimes they ask too innocent a question
Only to leave their teachers perplexed.
And other times they ask weird questions
Only to mind boggle their teachers.
Some times they talk to the things
Or they talk to themselves
Only to annoy their teachers.
Sometimes they laugh
And other times they just cry
Only to confuse their teachers.
Sometimes they talk nothing but philosophy
And sometimes they sit like meditating Buddha
To leave their teacher in pieces of mind.
So I fondly call them funny creatures,
They know nothing except fun and only fun.

RAMESH B CHAVAN
PRT
K V VIJAYAPURA

129

Life is A Canvas

Life is a canvas beyond size, with predefined sketches a perfect guise.
We fill them through our capacity, unaware of the prize.
Some sketches depict joy, while some highlight pain,
That is life though bitter but not to disdain,
Yet we lay no stone unturned to complain.
There is one and only one who is supreme,
He created this mystery for us to fulfil the theme.
Nonetheless the mystery is we excessively dream,
Dream to get everything and imagination to get golden wings.
Have you ever thought what life wants from us?
Just think on it and spend like a brush,
Put first patch of Humanity, second for the Fraternity
Add some Love and Sympathy,
Now your canvas is not empty.
Make your Existence in this style,
Instead of making it Futile.

Shamsun Nis
TGT (AE)
KV Maharajganj, Siwan

130

Water Droplets

Water droplets
as rain and dew
get collected
shape themselves
as ponds, lakes and rivers!

They symbolize,
strength in unity
they symbolize
their sedate struggle...

While flowing
With might
They symbolize power
and energy with synergy!

While in an oyster
They reincarnate
as Pearls
Symbolize beauty and strength...

Intra-Inter dependence, dependence, Independence
is their disposition
Merge into an Ocean
symbolize patience
and dedication

Is a drop of water
Greater than a human-being
In character, action and destiny?

RAJESH VASHISTH
TGT (English)
KV BEHOLI, SAMALKHA

131

Let Us Be Learners for Life

Nature keeps evolving,
Situations keep changing,
Our goals have to change,
So our ways have to change.

From birth to death,
Till the last breath,
We have to struggle to survive,
We have to strive to stay alive.

We have to mould ourselves,
We have to change ourselves,
To stay relevant,
We have to forever reinvent.

Those who hate change,
Those who do not change,
Do they have a chance?
Do they ever advance?

Change ends stagnation.
It is the harbinger of growth.
It challenges your Creativity,
So is it not an opportunity?

Let us not hold on to the past.
Let us learn to long last.
Let us be seekers for life.
Let us be learners for life.

Jaibala Prakash
Primary Teacher
Kendriya Vidyalaya Shalimarbagh

132
A Glance

In the walk of our day to day life
We hardly give a thought on
A lump of flesh that has
A tender mind and a fragile heart.
A mere glimpse suffices
To bring a curvy smile
On his shiny face
To conquer a multitude of little race.
The little world that he possesses
Full of conceptions and fantasies
Fragile enough to interrupt and disrupt
By a coerce voice and nasty look.
His glittering eyes
Always waiting for a 'Glance'
That may change the course of his life
Make the day ever imprint in his mind
A glance, a mere Glance
May be precious for the 'Being'
Who walks on the path
Enlightened by the one who is really great for him.

Anita Paul
Head mistress
KV Army area, Pune

133

Rock Upon The Rock

Rock upon the rock seems strange,
Found on the hills of Palkot Range
My motion came to a still,
To see Nature's work beside the hill.

Blessed are the rocks that stands,
Made by Nature's worthy hands
Seems so calm silent but proud.
I'm sure they speak to clouds.

They possess immense value of its own
Which intended me to capture in my phone.
Great are the deeds for such a lovely posture
To design the rocks on the lap of Nature.

So wonderfully do these rocks lie.
As if to welcome the passers bye.
For time may come and go.
But these rocks are just as before.

As such scenes are rare
And if you have time to spare
Do come and have a sight.
To fill your mind with delight.

Subhash M E Toppo
PRT
KV. No.1 HEC Sector 2
Dhurwa Ranchi

134

Upheaval

And when we have no one to talk or walk by our side,
Reading and writing is something that can make us feel delight.
Many times we feel low,
But we are living in an age that we are bound to go with the flow.
We all have so much to share,
But even the dearest of our friends don't have time to give an ear.
We all are becoming machines,
Pretending to have no emotions and feelings.
There was a time when we used to promise each other,
That we will be together forever,
But none of us was aware then,
That a time will come when pen and paper will be our only companion.
When we long for deeper conversations,
But fail to feel those connections,
Because instead of empathising,
More or less they are always busy criticising.
Then behind a smile we try to hide,
Whatever we feel from inside.
Subsequently our thoughts start finding their release,
In the pages of our diaries.
People come slowly and soon they leave,
And this really makes us grieve,
Because no matter how much modern we may become,
We always need someone to sit and listen.

Harshi Lamba
PRT
KV VRDE Ahmednagar

135

A Prayer to the Almighty

'O' Almighty, I have a very small and humble request
Please make me human being time and again
To serve the mankind and its interest with a lot of love and passion.

'O' Almighty, please let me remain an ordinary person
To understand a poor's plight and rich's pain
I don't need hell or heaven as this earth is so pure and fine.

'O' Almighty, please make me humbler than grass
Even smaller than the smallest particle of anatomic mass
To understand the mystery of your creation full of illusion.

'O' Almighty, please bring me to this earth umpteen times
Till part and whole comes together to become an eternal one
Till mine and thine soul unites to become a free Universal soul.

Biranchi Narayan Das
Principal
KV Bhawanipatna Kalahandi

136
Education

Education is power, education is light,
It will make our, future bright.
Education is Sun, education is Moon,
Practice makes one , perfect soon.
Education is Guide, education is Director,
It helps to build, nation's character.
Education is time, education is watch.
Opportunity is waiting, rush and catch.
Education is unity, education is peace,
Spread its fragrance, and take its kiss.
Education is aim, education is target,
Discipline and respect, you don't forget.
Education is body, education is soul,
Positive thinking is our goal.
Education is everywhere, education is everything,
To spread its fragrance, Let's do something.

Bhojraj R. Lanjewar
PRT
K.V. No.2 AFS Lohegaon

137

Unto the Last Breath

Let me be in the light of the Sun, oh my Mother !
To sip the nectar of your music ;
As it suffuses me with its divinity,
I humble myself as a blossom at your feet.
May your words be my utterances --
Unmisted, untwisted and unplayed for fun ;
May I not dwell on hollow words to survive,
But go beyond the words to heal the souls.
May I be filled with wisdom, not mere knowledge,
To be the tributary of your compassion !
May I be the store-house of patience
Which I receive from your treasure of peace !
May your brightness be the light of my eyes !
May your music be the life of my voice !
Bless me to pour it into the little hearts
To open their inward eyes to serve the world with kindness !!

B. Lekha
TGT (English)
KV No.1 JIPMER Campus Puducherry

138

To the Spirit of Woman

No bounds can limit you,
No chains can obstruct you,
Shatter the chains and spread the wings
Let the sky, wait till you fly, like a bird
and the child within you
if it is still alive.

The wings of hope
The wings of dream
The wings of pride
That make you gleam

Measure the zenith and spread the colour
To change the world, to repel the dolour

The colour of love
The colour of success
The colour of passion
The colour of sacrifice

Spread the colour and change the world
Define the world in your own words
Let the world witness this change
Gradually yet wide in range
Where everyone knows to respect you
And salute the awakened spirit in you

Dhwanika Pandya
PGT English
KV Bhandup

139

Uninvited Guest Albeit Numero Duo (Two)

The only welcome was the open door,
So he entered with his tail up and nose down,
Aiming for the garbage turning brown.
He paused not to lecture his host,
Lest he become a pest,
For he was, but an uninvited guest.

Like my dog, I care about garbage,
More for the order (or rather the lack of it),
And less for their odour
So pausing at the open door
Was amazed at the chalk and paper bits galore!
I called it a mess
And in an instant
Became a pest
And a person to abhor.

For what is life if one cannot mess it up,
With people around to clean it up!
So say people with money in their pocket,
"Throw some around" and keep out of docket.
It gives joy immeasurable
To have people innumerable,

With pan, broom and water, with body able
Only to be seen but not to be heard,
To clean up your mess,
So you can mess more!

Chalk and paper bits strewn today in the wake,
Become arrogance and apathy tomorrow in the make.
When no people able bodied or otherwise,
Will there be, to cure one, of the heart that aches!
And then mope and cry we shall, that no one cares
For like everything else in life,
What goes around comes around!

Usha Malayappan
PGT (Econ)
KV Kanjikode

140

Corruption

Corruption has seeped into the blood streams
Causing destruction and foiling dreams
No tryst with any martyr
Would bring back glory and character

Corruption is like the roots of a banyan
Which has exuded into every ruffian
Enhancing frustration and making one helpless
Leaving the innocent defenseless

Great leaders would feel ashamed
To look at the state of defame
To survive, one has to think
Of how to overcome this brink

Is there no respite to those who suffer
From those who are buffered
By the men in high places
For their selfish motives and graces

When will man be relieved
From the shackles of these corrupt deeds?
Will he be free from crime and punishment
To lead a life of peace and enjoyment

With integrity one would shriek with shame
In the good olden days of fame
But in the present world of corruption
No one has any compunction

A. Sujhatha Devi
PGT (English)
K V Steel Plant Visakhapatnam

141
Thinking

In a particular area
There are people high and low,
The sky is same
The land is same
Then why people grow in a specific frame?

Solitary we come to this world
And live with all.
But at last
We have to go back,
leaving materialistic things for all.

Don't run for fame, wealth and love
Try to give as much as you have
Learn the art of humanity
The best way to live
As it will make you immortal in
others' heart I DO BELIEVE

Piyanki Namasudra
Computer Instructor
KV Namrup

142

Eulogy 0512

I see you hanging as a frame,
Well dressed in wedding attire as I came,
Sparkle in eyes, glow on face,
A tender age, dream of holding a special place.
But seems God had a different plan,
He gave you a short lifespan.
He replaced you with me,
I came to your place holding hands of destiny.
You left behind, part of your heart(children)
For them your memories won't part.
I often think of you and call your name.
All I know you, is in the picture frame.
It's been six years since you passed away,
You are remembered every single day.
I make sure that you are captured,
In each click and each frame,
And let your children live up to your name.

Mrs. Rashmi Jain Bayati
(PRT)
K V No 1 Shahibaug, Ahmedabad

143
Sunday Morning

It's SUNDAY MORNING a special morn,
For no hurrying up at dawn,
Grasping ladles, cookers and pans,
Digging out spices, cereals from the cellar cans.

Pulling children from their sweet sleep,
And to race against time you weep,
But Ah! Today there's no alarm warning,
For it's SUNDAY MORNING a SPLENDID MORNING!!!

You feel, enjoy and admire,
That the grass is green,
The rose is red,
The magazines and news leisurely read.

There's time for casual facial,
And an elaborate cuisine special,
Well set table with savouries and momentous salads,
With copious time for a teta-a-tete glad,
Then haste to programme watching,
For of course, its SUNDAY EVENING.

Tawny, purple, fur, grey, the sun downs,
Enveloping and gripping all merriment down,
Reckoning and beckoning the monotonous schedules,
For Monday to Saturday chime the modules.

{1}

Out of the tawny sunset blooms a gloom,
To girdle and prepare for the entire week,
Finally drained and oozed and weak,
Still hopefully work to get and enjoy,
That SUNDAY MORNING the WONDERFUL MORNING.

M. ANITA TAMPI
PGT (English)
KV DIAT GIRINAGAR